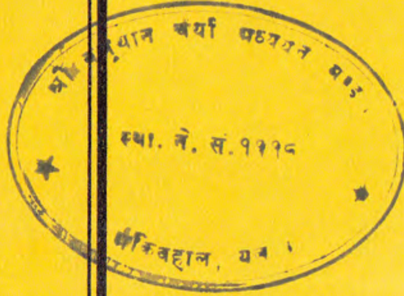
श्री बज्रयान चर्यागीत संग्रह



संग्रहकर्ता

श्री मंगलराज बज्राचार्य




ग्वाहाली : रु ५००/००
(न्यास:जक)

मध्येमेरु

गुरुमण्डल दनेगु

सरोवरस्था स्फटिकस्येमण्डल ॥ सरोरुहेसं करमचयन्ति ॥

तारोप्रयोगा रतिवन्धगिता ॥ गौरीतनुना रदभैरविय ॥

मध्येमेरु महामणि कनकराजिते पूर्वविदेह जलजाम्वोद्विप; अपरगोडायनी उत्तरकूरु भुवने पंचबर्ण पञ्चजिन; व्यापियारे नमेपञ्चबुद्ध ॥ विस्वश्रृजित विस्वहित विस्वभूत पञ्चमुरुति ॥ अष्टद्विपानल वहन्त्ति जिनमानसा हरन्तुभये तिमिर घनघोररुरे ॥ जातवेदनस्य या उपद्वीप रा उपद्वीप पारिजान्तुदाने ॥ स्वसरल्ला उपद्वीप चउविदिगभुवने वा उपद्वीप श्रीखण्डपरशु ॥ द्विरँदवर प्राचिय नररुधिर याचिय सप्तअष्टादर चुम्बियारे ॥ अओलला उद्धिचिय सायकंचक्रा मणिकूप निधिनिखिल वेदयन्ति ॥ गूरुचरण तिबरसंभगति परिभावना मनकुसुम उत्तम सफलिपूजा प्रणव परिभारथि सप्तपरिपूरिता भवजलनिधि सकलसेन्तुभुतम् ॥ १ ॥

ताल झम्प

राग भैरवी ॥

रागमाला		विजाग्नि आन्ततसिरपुष्पं ॥ आश्वापमाला पियजात साक्षा ॥ विसरुपणेतिदेहा रागपधाने पद्मञ्जलि ॥		
आदि शुन्य	त्रिसमाधि ढेंगु	आदिशुन्य स्वभावविस्वः अनिलअनल जलभुमि; सम्भव मेरुशिखर माझे सर्व्वमण्डल संस्थित ॥ धुँ ॥ डाक डाकिनी सर्वगगने व्यापित पूजितबज्राचार्य चिन्तित मानसं वोधिस्वभावे अनुत्तर सिद्धिप्रदाता ॥ त्रिसमाधि योगेमन्त्र विन्यासे स्वस्वदेव परिपूज्ये ॥ काष्ठपाषाने मृत्मयरुपं अद्वय रसवेदियारे ॥ विस्वकूलिस मध्ये भ्रुँकारजात कुटाङ्गार स्वभावे; विस्वपङ्कज मध्ये अद्वयरुपं सर्वदेव परिसंस्थितं ॥ गुरुचरणे शिलेगतधरिया भनयि तथागतवज्र; त्रिभुवनव्यापित तत्वस्वभावे फलिँगेरो गगनेरिणा ॥ धुँ ॥ २ ॥	ताल झप	राग पञ्जलि ॥

अनुत्तर तथतार वंकारभाव्य रत्नरुपचिन्तित विचित्रकलश ॥ ओँ आः हुँकार वज्रामृत मूदकंसप्त संशोधित ज्ञानामृतमय चन्द्रामृत रसंवोधि फलदायकं सर्वजिन व्यापित सहज कलशं ॥ जगतमल संशोधित शुन्य करुणोद्भव संसार नासन विरक्षरुपं ॥ वज्र परमानुमय गन्धावु संयुक्त शंख संस्थापित पञ्च पीयूषं ॥ हुँकार मन्त्रपूष्प श्रग्धवर्द्धन वज्र संस्थापित विपांकलशं ॥ घट्टमलभ्यन्तर तप्त रुपभावे आकृष्ट मण्डाकिनी जलरुपं ॥ झतितिसा धारण देवताचक्र ज्ञानसत्व मानुमय हृद्बीज किरणं ॥ पाद्यादि आचमन दानपूरशरण समय सत्व प्रवेशित विमर्ड कलशं ॥ महारागद्रवीभुय वोधिचित्तरुपं समयसत्व ज्ञानचक्र एकीभुतम् ॥ धुँ ॥ ३ ॥

कुंभनील	वारुणीपूजा १	कुंभनील भाजन पञ्चज्ञान स्वभाव; कंकाराक्षर वीजसमुत्पन्ना; निवासित महाःस्वभाव मामकि; सुरसुन्दरी नवजौवनी ॥ धुँ ॥ नमामि श्रीवारुणी लक्ष्मिवज्रांवु भैषज्य समुत्पना ॥ धुँ ॥ आलीढ शेषरविनयेन संस्थितमेकमुख त्रिनयन रोचनीदेवी ॥ धुँ ॥ अष्टादशभुज धारिताद्वय कर धनुवान सुरक्षेप द्वितियकरे ॥ पाशांकुशखर्त्पर ध्वंज गडा धण्ठा, नवम वरप्रथमसकरे ॥ धुँ ॥ अपरउर्द्ध स्फेटक धनुवज्रवंध; खत्वांग कमडल धरन्ते ॥ धुँ ॥ त्रिशुल मुड्गल वज्रवान गनयन्ति अन्द्रकमोतरे ॥ धुँ ॥ ॐ ह हो ह्रीं हकार; हरितवर्ण मन्त्राकारन्तु भावयेत् ॥ धुँ ॥ तेनोद्भव अहिनी सकुलवारुणी; परमाद्यवज्रेन्द्र जपमाला ॥ धँ ॥ ४ ॥	रागबसन्त ललित	तालदुर्जमान
नीलवर्ण	वारुणीपूजा २	नीलवर्ण वारुणीदेवी चक्रिकुण्डल कण्ठि रोचक्र मेखल भुषित रुपधारिता ॥ सुसमानसं भक्ति संपुजिता ॥ स्वस्ववीजाक्षरै समुत्पन्ना देवीमामकी ॥ धुँ ॥ नमामि २ देवीश्री मामकि; नवजोवनदेवी त्रिनेत्रसुरसुन्दरी ॥ धुँ ॥ पञ्चकुम्भे अमृतपात्र : सुरासुरनरै वन्दिर चरणे ॥ धुँ ॥ ५ ॥	रागषटकंकार	

पीतवर्ण	वारुणीपुजा ३	पीतवर्ण मामकीदेवी विस्वव्यापिता २ अमृतपानरुप तारणीदेवी ॥ धुँ ॥ नवजौवन त्रैलोके सुन्दरी स्वस्ववीजाक्षरै समुत्पन्ना ॥धुँ॥ चक्रिकुण्डल कण्ठिरो चक्रमेखला; लक्षण संयुक्ता गात्रविभुषिता ॥ धुं ॥ नमामि वारुणीदेवी सुरेश्वरी; पुजयामि मनोवाँच्छिता ॥ धुँ ॥ सतुगुचरणे प्रणमामि भक्त्या; अनुत्तरसिद्धि मोक्षपदं ॥धुँ॥ ६ ॥	राग ठेनी	
रक्तवर्ण	वारुणीपुजा ४	रक्तवर्ण रत्न त्रियरोयन सुन्दरी २ अष्टादश भुज फलनन्तु किरणे ॥ तुम्हदेवी वारुणी महामामकीदेवी ॥ धुँ ॥ जगत प्रमोदिरे मयनसुरंगे ॥ धुँ ॥ आगम वेदपुराण वखाने योगधर्म्म दिक्षागुरु उपदेशे ॥ धुँ ॥ पञ्चबुद्ध स्वरुप सतुम्हे सहश्र योगिनीरैया हेरुवन्तु हेरुक ॥ धुँ ॥ शतुगुरुचरणे शीलेगत धरिया भनयिबाकवज्र सुरासुर रुपिणी ॥ धुँ ॥ ७ ॥	राग नाटक	ताल झप

हरितवर्णांगी	वारुणीपुजा ५	हरितवर्णांगी त्रिनयनसुन्दरी २ नवजौवनी राओन स्वभा ॥धुँ॥ तुम्हदेवी मामकी वारुणीदेवी ॥धुँ॥ अष्टादशभुजा फलनंतुकिरणे; पञ्चबुद्धस्वरुपा तुम्ह योग्निश्वरी ॥धुँ॥ हकारेण हरितवर्ण होकार गन्धनाशन; ह्रींकार वीर्यहन्ताच अमृताकारं ॥ धुँ ॥ सतगुरुचरणे शिरेगतधरिया; भनयिसिद्धिवज्र वज्राचार्यगीता ॥धुँ॥ ८ ॥	राग कदु	तालषटकंकार
गोकुदहन	पात्रपुजा	गोकुदहन पञ्चज्ञानस्वरुपे; पञ्चामियारस पञ्चशालि पूजियारे ॥ धुँ ॥ तुम्हदेवी वलिराय त्रिभुवनवीरा ॥ वीरे मेलापक समयाआनन्दे ॥ वीरंवीरेश्वर सहजानन्दे; कनकमलासन हृदयआनन्दे ॥धुँ॥ पञ्चबुद्ध पञ्चज्ञान स्कन्धस्वरुपे; देवासूरनर प्रमोदितहृदया ॥धुँ॥ ॐ आः हुँ ह्रीं ख शोधनकरिते; डमरुधण्ठा ध्वनी वीरमाआनन्दे ॥धुँ॥ ९ ॥	रागगन्धारभैरवी	तालछकप

पञ्चमहापात्र	पञ्चपात्रपूजा	पञ्चमहापात्र समयाचारी भुवनेस्थाने २ दशदिगदशवर आराधियारे ॥धुँ॥ समयाआनन्दे भनतिहोयि ॥ विरंवीरेश्वरी वरयिस्थाने मण्डलमोहनि विस्वफलिया; ए हुँकारावलिदानदेवी दानपतिया विध्ननिवारिया ॥धुँ॥ सत्य श्रीसम्वर माभ्के कालचक्र हेवज्रकाय विस्वफलिया; योगयोग्निमेरीया विस्वजननी ॥ समयाआनन्दे भनतिहोयि ॥ सिंहनाद वाजियारे डमरुप्रसादे; अष्टजोग्नि दानपुण्य; जारंधरपुरे अवरधुयिया कर्णपाचने भनतिहोयि ॥धुँ॥ १० ॥	राग पद्मजली	तालमाथ
भानुमण्डल	कितीकिलशपुजा	भानुमण्डलमाभ्के ज्वलित हुँकार ॥ आलिकालिद्वयि चापयि हेरुक ॥ नमामि २ श्री निरारम्भ त्रिभुवननाथ ॥धुँ॥ वज्रवाराहि आलिङ्गनअद्वय ॥धुँ॥ कृष्णवर्ण चतुवदन त्रिनेत्र विस्वकुलिश अर्धचन्द्रसंयुक्त ॥धुँ॥ डाकिनी रामा खण्डरोहा रुपिणी चतुदेवीक्रीडन्ति विरम्विरास्या ॥ धुँ ॥ भुषितषट्मुद्रा छत्तिसंविरंविरेश्वरी भनयिअनुपद्मवज्र हेरुकदास्ये ॥ धुँ ॥ ११ ॥	रागशृंगारनाटक	तालदुर्जमान

रागमाला

करेचिन्ताआँहाँहे मणिस्तुत्वा ॥ सगणेत्योआँहाँहे वरंददौ ॥
सुप्रतिष्ठाआँहाँहे नाटकराग ॥ हेमगौरआँहाँहे सूलोचना ॥

त्रिदसरोरुह

त्रिदसरोरुहं दिनकर मण्डलराजित त्रिभुवनजननी; रगतकर्नेउर त्रिणिनयने;
मारचतुरगणच्छेदनि ॥धुँ॥ देवीकर्तिकपालधरा ॥धुँ॥ भुषित नरशिरमाला; कमरकुलिश
दुयिताल ; वाजयिनाञ्चयि सहजसंरुपिनी ॥धुँ॥ चक्रिशिरे कर्णेकुण्डल कण्ठेकण्ठकसोभा;
हाथेरोचक्र कर्त्तियाउमेखला; चरणेनोपूरभुषणी ॥धुँ॥ भवप्रदयानर तेजधरन्ते; डाकिनी
ज्ञानकराया; भावाभाव विवर्जित; अनुत्तरगगन संरुपीनी ॥ धुँ ॥ पदुमवज्रपद शिलेगतधरिया;
गावन्ति हासंकुलिसा; अनुत्तरसिद्धि मोक्षप्रदायनी; प्रणमामि श्रीवज्रयोगिनी ॥धुँ॥ १२ ॥

रागसुप्रतिष्ठानाटक

तालझम्प

रागमाला		*श्यामासुकेशी; दयितेनसार्ध्य ॥ कृपादधाम्य् समनेनमध्या ॥* *अन्योन्यगधा पिवाहुली राग । वारागनेयं कहुरीराग ।*		
जयवाञ्छली		जयंवांच्छलिदेवी रुपदेवी घरणे; सयरसुरासुर वन्दितचरणे ॥धुँ॥ तेहे भगवति पादुखमन महिमण्दित नोपुर रुणभुनकारा; हाडआभरण विभुषित मेषल घण्ठउलोला; त्रिनित्रिनित्रिनयति नयनां तेनान्ता ॥धुँ॥ करतिखत्पर धारी मुण्डमालाभुषिता; स्कन्धे खत्वांग कपालधारीत मकुटकेशी दिगंबरा ॥ धुँ ॥ शिरसिसिन्धुरधारी कजल नयने कस्तुरी कर्पूर भनयीतांवोरा ॥धुँ॥ भनयि सुगतवज्र; वाँच्छलिदास; प्रणमामि श्री वज्रयोगिनी वरदप्रसादे ॥ धुँ ॥ १३ ॥	राग गुञ्जरी	तालमाथ

षट्योगीनी	षट्योगिनीपूजा	षट्योगिनीदेवी त्रिभुवनव्यापिता २ विध्नमार दुष्टदर्प विनाशनी ॥धुँ॥ नमामी २ देवी श्रीवज्रवाराहि; २ ऋद्धिसिद्धिदायनी जगतजननी ॥धुँ॥ पुर्वदलगत रक्तवर्णागी; २ ईशाने यामिनीदेवी नीलवर्णागी ॥धुँ॥ वायुव्यमोहनीदेवी सितवर्णागी; पश्चिमे संचाशणीदेवी गौरवर्णागी ॥धुँ॥ नैऋत्येसंत्रासनीदेवी हरितवर्णागी; दक्षिणेचण्डिकादेवी धुम्रवर्णागी ॥धुँ॥ चतुभुजाएकानना पञ्चमुद्राभरणा;२ स्वस्ववीजाक्षेरै संभवरस दिगम्वरा ॥ धुँ ॥१४॥	राग कर्नटी	तालएकताल
मण्डलसमयचक्र	मण्डलजात्रायागेनु	मण्डलसमयचक्र मण्डलसम्पुर्ण; द्वादशभुज चउचारुपवयने; जानंन्तु करुणे श्रीसंवरजोगिनी ॥ श्रीयंवाच्छलीदेवी अवतारुणीयारे ॥धुँ॥ डाकीनी रामा खण्डरोहा रुपिणी चारिमार चउचापियारे २ कायवाकचित्त त्रिनिभुवने; दानपतिया शुभअवतारुरे ॥ धुँ ॥ यागयोगिनीमेरीया समरसंभावे; अष्टशमशाने हेरुकराया ॥धुँ॥ १५ ॥	रागपञ्चजली	तालमाथ

पञ्चतथागत	मण्डलतोपुरे	पञ्चतथागत मेरीयारे समया आचार्य विस्वफारुरे; दशदिग दशवल आरुढभवन्ता दानपतिया विघ्ननिवारुरे हे ॥धुँ॥ हुँ हुँ वीरवीरेश्वर; वलिदानदेहा दानपतिया शुभअवतारुरे ॥ एं हुंकार वलियापियारे मण्डलनोरु विस्वफारुरया; पुर्व वैलोचन दक्षिण रत्नसंभव पश्चिमे अमृताभ जिनव्यापियारे; उत्तर अमोघसिद्धि माझे अक्ष्योभ्य चारिमार चउचापियारे ॥ समाधिश्री महासम्वर;माझे कालचक्र, हेवज्र विश्व फलिया ॥ धुँ ॥ नाना वोधिसत्व आर्शिवाद चालिमार चवुचापियारे जान्धरीयुक्ता कर्णपा गावन्तीवयिया चारिमार चक्रथापियारे ॥धुँ॥ १६ ॥	राग भैरवी	तालमाथ
रागमाला		*जटादधाने कृतभू त्रिसुत्त ॥ काखायवासं कृतदेहयुक्तं ॥* *संयोगयन्ति कृतने त्रमूद्रा ॥ गन्धाररागे कथितं तपस्थि ॥*		
नमोहुँकार	गगुभे छोपुजा	नमो हुँकारुण रुवधरु; स्वच्छविसत्व उत्तारुणरुओ ॥ तेनाहुँ २ तेना ते ते हुँ ॥ धुँ ॥ धवरसू संखिय देहधरु; सोरद स्वहियंकारनरुन ॥ धुँ ॥ द्वन्द्व आलिंगन योगधरु; वज्रघण्टा समुद्रारय मुरति ॥ धुँ ॥ माया विदेहलीन जगु; सोहियं वज्रंसत्व परमेश्वर ॥ धुँ ॥ १७ ॥	राग गन्धारभैरवी	तालदुजमान

रागमाला		*आत्रामनेत्रा कनकाभगौरी ॥ रक्तावसाने चकृतामृगाक्षी ॥* *मूग्धेविधूवं भ्रमराप्रभाते ॥ मधुकरीय कथितंमूनीन्द्रौ ॥*		
त्रिचक्र	छोपुजा श्रीचक्रसम्बर	त्रिचक्र रविशशि मण्डल माझे स्थिति आनन्दमूरुतिधरा २ वज्रवाराहि आलिंगनसम्वर नाना रश्मि महोज्वला ॥ तेना हुँ हुँ २ तेना तेतेहुँ हुँ ॥ नीलवर्ण चतुवक्त प्रतिमूख त्रिनेत्र परमानन्द मूरुतिधरा ॥ विस्ववज्र अर्धचन्द्र जटामकुटधरा हाडाभरण सुशोभिता ॥ वज्रधण्ठ गजचर्म डमरु खद्वांगधर विरमानन्द मूरुतिधरा ॥ करतिकपाल परसुपाशधरा त्रिशुलब्रम्ह शिलधरा ॥ दिगम्विदिगं काकास्या दिगजमदा दियारे सहजआनन्द मूरुतिधरा ॥ नमामि २ श्रीचक्रसम्वर शद्गुरुचरणे आराधिता ॥ धुँ ॥ १८ ॥	राग मधुमत	तालत्रिताल

योगाम्बर	द्योपुजा	नमामि २ श्रीयोगाम्वर ईश्वरज्ञान डाकिनी परमेश्वरी ॥ दूरीतहरण अतिधवरंतु देहा ज्ञानडाकिनी आलिँगना ॥ तेना हुँ हुँ २ तेना ते ते हुँ हुँ हुँ ॥ दहिनगजसर वामधनूधर कूचजूग ब्रम्ह कपालधरा ॥ वज्रधण्टा त्रियलोचन सुन्दरी प्रहसित क्रोधश्रृँगारा २ पदुमवज्र पद माधव भगवती प्रावन्तू पुण्यप्रदाता ॥ भवन्तु २ सर्ववन्धनमोचय सर्वजगत उतारणं ॥ विविधि मारवर विघ्नविनासन ऋद्धिसिद्धि वरप्रदायता ॥ शतगुरु चरणे शिलेगत धरीय आदि बुद्ध परमेश्वर ॥ धुँ ॥ ॥ १९ ॥	राग मधुमत	तालत्रिताल
अमरति	विद्याधरी देवी यागु	अमरतिदरसरोरुह विराजिता त्रिभुवनस चराचर एकरुपा; डाकिणी वरनी वज्रवैरोचनी॥श्रीदेवीत्रिशक्तित्रिभुवनमाता॥धुँ॥नाभिमण्डलमाझेभुवनेश्वरी; त्रिनिचक्रभेदिनी नयना; त्रिनितत्व त्रयक्षरत्रिभुवन व्यापिता; अक्षयनिरञ्जन ज्योतिस्वरुपा ॥धुँ॥ भुगुतिमुगुति वरदेहिमेमाता; श्रीवज्रजोगिनी पादशरणा ॥धुँ॥ २० ॥	राग ब्वनी	तालमाथ

श्रीबज्रयागीनी	खड्गयोगीनी	श्री वज्रयोगिनी हेरुकराया त्रिभूवननाथ देहिमेप्राने ॥ पिवयिरेमहारस महासूखक्षरिया २ वज्रदेवीफलिया अनूत्तरज्ञाने ॥ धुँ ॥ उर्द्धनारित्रिदल कमलेसंयोगे २ देवविरासे पवनसंभेदही ॥ भुञ्जयिरे पञ्च महासूखच्छेरिया २ पञ्चशिल सम्विरे वारुनीदेवी सत्गुरु प्रसादे चतुर्थाभिष्येक प्राणेश्वरीदेवी संसारसमूद्र ॥धुँ॥ २१ ॥	राश्रगारमारसी	तालषटककार
ध्यान		सुंकार बिजमुत्पन्ना सुमेरुमडण्डल शुभ ॥ तस्योपरि समुतं भुतंरत्न सिंहासनोदय ॥पद्मचन्द्रै स्थितंदेव बज्रसत्व जगतगुरुं ॥ द्विभुजेनमेकमुखं शुक्लवर्ण महोज्वलं ॥ बज्रधण्ठा धरंनाथ नानाभरण भुषितं ॥ निरञ्जन निराकार बज्रसत्वं बिभावयेत् ॥		
रागमाला		*सुवर्णप्रभाते सुरभुषनाञ्च ॥ नीलनिचूर वपूषंवहन्ति ॥ कान्तेप्रदोषं तनिवेसुतेश्री ॥ मान्यान्यचूरं रामकरीप्रवेश ॥*		

मेदिनी	मेदिनी जलअग्नि वायूमण्डल उपसंस्थित श्रीसुमेरु ॥ नाना रत्नमय ज्वलित उस्कृत तेजसंस्थित श्रीसुमेरु ॥ नमामि २ श्री गुरुवज्रसत्व अनेक गुणनिधि सागरा २ ॥ विश्वनाथ विश्वव्यापित; गुरुत्रिभुवन संपुजिता ॥ आकाशवर्ण मुखनयन; सुविशाल वज्रधण्ठ धारीता ॥ तिलक सुवर्ण सुशोभाष्कर रत्नमकुट शिरेधरा ॥ रत्नकुण्डल सुरसिचिवर; सत्वपर्यङ्क संस्थिता ॥ २ चतुरद्वीगपादि गजरत्नादि रत्नमण्डल सम्पूर्णे ॥ हृदि प्रमोदित गावन्तिविलाशवज्र गुरुनिरञ्जनशिरेधरा ॥ ऋद्धिसिद्धि वरप्रदाता; सर्वज्ञजिनज्ञानभवप्रदाता ॥धुँ॥२२॥	राग रामकली	तालमाथ
स्तोत्र	*गुरुबुद्ध गुरुधर्म्म गुरु संघ तथैवच ॥ गुरुबज्रधरतथैवच गुरु सर्वान् नमाम्यहं ॥*		

कमलबिकाशित स्थितीविधासन कमुण्डप्रियवर्ण समदेहा २; चतुरवदन कुवलय दरसन नित्य प्रकाशिता ।।धुँ।। नमामि २ श्रीमहामञ्जुश्री सकलगुण रायसुरगुरु; कुमतिदहन ज्ञानवरपद ; सर्वज्ञगुण निधिसागरा; ।।धुँ।। प्रथम करद्वयधारित वज्रघण्ठमुद्रामालिगन राजिता २; द्वितिय अंकुशधर तृतिय ज्ञानस्कन्ध; चतुर्थ खड्गसव्यक्षुरधरा; ।।धुँ।। मुभयभुजपाश भुवनधर्मचक्र; चतुर्थवाम दृष्टपुस्तकां; रत्नमुकुट शिरेप्रज्वोलिता; किंर्विषमधुहास रुचिवरा; निवुद्धि वुद्धिहोयि निमित्त भनित सर्वज्ञ ज्ञाननिधि भवप्रदाता; ए हुँ चरण सुमरणमार्गत परमाद्य वज्रजपमाला ।।धुँ।। २३ ।।

एकवदन	श्रीमञ्जुश्री	एकवदन रत्नमकुट आलंकृता चतुर्भुज खड्गपुस्तक धनुधारी ॥धुँ॥ नमामि श्रीमञ्जुश्री पद्मनृत्येश्वरा ॥ दहिनगणपति वाम श्रीमहाकाल सगणमण्डलया माझे प्रज्वोलितस्थिता; श्रृष्टिसंहारया विस्वव्यापिता अष्टमहाभय वहुव्याधि दुरितहरणा वज्रधरप्रशादे दासभनयियाः; गुरुचरणे मोरुसिद्धि वरप्रसादे ॥धुँ॥ २४ ॥	राग मालव	
अओनिनि	चण्डमहारोशन	अओनिनि हितजानु नीलसमदेहा २ केकेर त्रिनयन भिषणवंदन ॥ ते ना न्ता २ हुँ हुँ जात अचलवीरा॥धुँ॥ निपिंदितघनद्युति शोभितमगने; पाशखड्गधारी त्रिभुववननाथ॥धुँ॥ हरीहरब्रम्हा ईन्द्रचउमारा; मारविघ्नद्युति शत्रुभयहराणा॥धुँ॥ विविधिरत्ना मौलि लंकृतदेहा; जगतविवाँछित वलफलदाता ॥धुँ॥ २५ ॥	राग कर्नाटी	तालषटकंकार
स्तोत्र		*निलवर्ण महाबीरं खड्गपाश तर्जनी ॥ सर्वदुष्ट क्रोध च अचलबीर नमोस्तुते ॥*		

नमामि२श्रीजिनधर्मधातु	श्रीस्वयम्भु	नमामि २ जिनधर्मधातु स्वयम्भु; त्रिभुवन अनुत्तर धर्मधातु वागेश्वर ॥ नमामि २ श्री जिन पञ्च जिन नमोस्तु ॥धुँ॥ दशभुमि द्वात्रिश महामुनिधरा ॥धुँ॥ स्वर्गमध्येपाताल भुवनश्रीकापोटल २ येचउ निरञ्जन महामूनिधरा ॥धुँ॥ धर्मश्रीमित्र ज्ञानेश्वरीमित्र २; नेपालमण्डल महासुखराया ॥धुँ॥ वामभुज पुस्तकधनुधरा २; दहिन तिष्णखड्ग सरधरा ॥धुँ॥ श्रीलोकेश्वर महासुखराया; राजाधिराज श्रीनरेन्द्रमल्लदेव ॥धुँ॥ श्रीवज्राचार्य वन्धुदत्तआचार्य; भनयिवाक्वज्र त्रिलोकचरीता ॥धुँ॥ २६॥	राग नाटक	तालदुर्जमान
पञ्चभुतात्मक	श्रीस्वयम्भु	पञ्चभुतात्मक ज्योतिरुपचैत्य नमामि २ श्रीपञ्चबुद्ध चरणे ॥धुँ॥ सहश्रदलपद्मेस्थ श्रीवैरोचनदेव श्वेतवर्ण सिंहासन वोध्याङ्गमूद्राधरी ॥ पुर्वदिगस्थित अक्षोभ्य नीलवर्णदेहा; भुस्पर्श मुद्राधरी गजासनस्थित ॥ दक्षिण दिगस्थित श्रीरत्नसम्भव पीतवर्ण तुरंगासन वरदमूद्राधरी ॥ पश्चिम दिगस्थित श्रीअमिताभ रक्तवर्ण मयूराशन ध्यानमूद्राधरी ॥ उत्तर दिगस्थित अमोधसिद्धि; श्यामवर्ण गरुडासन अभयमूद्राधरी ॥ शतगुरुचरणे शीलेगतधरीया; भनयिगणेशराज वज्राचार्यगीता ॥धुँ॥ २७ ॥	राग सहज	तालजीट

ध्यान		*तत्र विस्व बज्रमध्य ॐ कारज कनक वर्ण चिवर कर्णिकाधरं ॥ दक्षिणा अभयमुद्राधरं बामे बरदहत शान्तरुपं विशाल नेत्र सनिग्धं कचितकेश, एवभता सम्येकसंबुद्ध तथागत बिभावयेत सदा*		
अष्टदु	श्रीशाक्यमुनी	अष्टदल सनरोज उत्भव प्रकाशित २ श्रीशाक्यमुनि वरध्यानलोचना ॥ दहिन श्रीवज्रपाणि वाम कमलपाणि नमामि श्रीधर्मराज महामुनि ॥धुँ॥ दहिन क्षिक्षिरिधर वाम कुण्डिकापात्र; विचित्र चिवरधारी भुवनव्यापिता ॥धुँ॥ कारुण्य मानस निर्मलहृदय; सत्व उद्धारण अभयप्रदाता ॥ जरमजरम सुगत वलसेविता तुम्ह सुमरण मोक्षप्रदाता ॥धुँ॥ २८ ॥	राग बसन्त	तालदुजमान

स्तोत्र		*नमस्ते शाक्यसिंहाय सद्धर्मपुण्डरिकाक्ष सर्वज्ञकरुणात्मकं ।। समन्तभद्रशास्तानं श्रीशाक्यसिंह नमाम्यहं*		
द्रवितकनकवर्ण	श्री शाक्यमुनी	द्रवितकनकवर्ण सुनिर्मलदेहः ।। श्रीवज्रासनस्थित ध्यानसर्वधारी ।। श्रीशाक्यमुनिन्द्र मणिकेतुरीशः ।।धुँ।। कृपागुणनिधि मोक्षद्वारईश्वरः ।। अभेद्यशरीर निरन्तरअपाय ।। शुन्यताप्रज्ञानध्वज तथताज्ञानसहित ।। नानासमाधिंधृत्वा भुतकर्मस्मृत्वा ।। भवचक्रंदृष्ठ्वा धर्मचक्रंकृत्वा ।। श्रीवत्सनामनी महाविहारेस्थः ।। ईयंगीताचरिता भक्तगणेशराजः ।। हेतुसुप्रभाव तत्वशुद्धस्वभाव ।। तस्मैगौत्तुमाय कोटिवारंनमः ।।धुँ।। २९ ।।	रागश्रीँगारसारगी	तालमुलमाथ

ध्यान		*पद्मोपरि स्थितंदेव ह्रींकार बीज सम्भवं बरद कमलधरं ॥ नाथ बिशालनयनशुभा रक्तवर्ण महाशान्त त्रैलोक्याधिपति प्रभु ॥ जिनराज शिरसनृत्यं परमयोधारितं सहश्र सूर्यतत्रे बज्रसत्व मूत्वर ते सदा करुणा सागरंनाथ करुणा निग्धमानस ॥ अनुत्तर महानाथ बिभाव्यसदा ॥*		
उदितभुवन	करुणामय	उदितभुवन कमलासनकिरणे ललितपद रवस्वभावे ॥ निर्मलहृदय करुणामयनाथ २ देहिमे अभयवर प्रदाता ॥धुँ॥ तुम्हदेव जुग्येजुग्ये शरणा ॥धुँ॥ त्रिभुवन व्यापिता जगत उद्धारिया २ प्रणमामि वुंगमलोकेश्वरा ॥ कनकरत्न मणिहारविभुषिता; कनकसुत्र वस्त्रधरीया वामकमलधर वरद आभरणे; सहजानन्द मुरुतिधरा २ सुरनरयक्ष किन्नरनाग पुजियारे; ललाटचरणे सिलेगतधरीया २ ॥ रक्तवदन मूखनयन सुलोचना सर्वलक्षण सम्पुर्णे ॥ तिमिरघोरखलु मोक्षप्रदाता; दर्शन पापदुःखहरणा २ रत्नखचित्त छत्रधारी लोकेश्वर मर्त्यमण्डल भुवनविजया ॥धुँ॥ ३० ॥	राग पद्मज्योती	तालमाठ

स्तोत्र		*श्री लोकनाथं महानाथ पद्महस्तंजटाधरं ॥ जिनमौली जगतसर्वगुण लक्षढा श्री लोकनाथंनमाम्येह ॥*		
पोतरसुखावती	श्री लोकेश्वर	पोतलकामिनी आराधियारे सिद्धाजोगी बन्धुदत्त नरेन्द्रदेव ।।धुँ।। नमामि २ श्रीलोकेश्वर त्रिभुवनेश्वर ।।धुँ।। हरिहरब्रम्हा इन्द्रादिलोकपाला; नागयक्षगण वन्दितचरणे ।।धुँ।। तुम्हसुमरं तेपापहरणा; व्याधिदारिद्र दुःखहरणा ।।धुँ।। सुखावतिभुवने धर्म्मसरणे; श्रीलोकेश्वर जन्मजन्मसरणा ।।धुँ।।३१।।	राग मराठ	तालअष्टमाथ
अरुणसन्निभ	श्रीजटाधारिलोकेश्वर	अरुण सन्निभदेह पद्माशनस्थित कारुणीमानस हृदय ॥ नमामि श्रीजटाधारि लोकेश्वर भुगतिमुगति वर प्रदाता ।।धुँ।। हिरण्ये रजरत्न सिरे प्रज्वलित विचित्रमणीहार भुषिता ॥ दहिनवरपद वामकरधर विशालनयन शुलोचना ॥ त्रिभवनव्यापिता सत्वउधारिया सयरमनोरथ भुवनव्यापिता ॥ सुरनरयक्षगण किन्नरसहिते पुजितचरण शिलेगतधरिया ॥ नरकतिर्यक कुँघोर विनाशीदाता जरम जरम तुम्हचरण शरणे ।।धुँ।। ३२।।	राग ललित	

श्रीरक्तपद्मासन	सुखावती लोकेश्वर	श्रीरक्तपद्मासन जटामकुट अर्द्धचन्द्र २ अमिताभ धृतमौरी हलाहल ।। अतिप्रियदम्पत्ती हलाहल लोकेश्वर; ।। त्रिनिमूख त्रिनयन षट्भुजा ।। दहिन भुजधर सरजप अभयवाम धनुपद्म शक्तिधर ।।धुँ।। अरुणीभनीभदनाम्ता ईलोकेश्वर २; सर्वश्रृष्टिकार नवहुस्वरुप ।। धुँ।। षटगति मोक्षद्वार भवसेतु वैद्यराज प्रणमामि गुणमामि गुणनिधि लोकेश्वर ।।धुँ।।३३।।	राग रामकरी	तालजति
श्रीकच्छपाल	चोभारदेव	श्रीकच्छपालगिरिभुवन निवासित २ श्री अमिताभ शीरेमौलीधरा ।।धुँ।। नमामि२ श्रीआनन्दादि लोकेश्वर; त्रिभुवाव्यापित सुमंगला ।।धुँ।। मणिमयशोभित प्रवरजटाधर २ रत्नवदन कमलाशन; ।।धुँ।। वैतरागसंयुक्त अनुत्तरज्ञानप्रद भुगुतिमुगुति भवसंप्रदाता ।।धुँ।। अरणे मनोहर वागमति मण्डित विध्नविनायक गणेश्वरा ।।धुँ।। श्री अनन्त नागराजा सुमनोहर बागमति तीर्थ निवासिता ।।धुँ ।। सतूगुरु चरणे सिलेगत धरिया; प्रणमामि श्रीलोकेश्वर संप्रद । ३४।।	राग रामकरी	तालमाथ

अतिभिषनागा उग्रप्रचण्डा त्रियमूखषटभुज चरणारीढा २ शुन्यालिंगन रत्नाभरणा वज्रधण्ठधर नरशिलमाला ॥ नमामि श्रीत्रैलोक्यविजया विस्वव्यापिता विस्वनाथ २ बुद्धधर्मसंघ पालितप्रतिज्ञा पादतरस्थित उमामहेश्वर विश्वनाथ विश्वव्यापिता ॥धुँ॥ रक्तरायन क्रोधस्वभावा परवृतदश क्रोधविध्नसंहारा; खड्गपुस्तकधर मारसंत्रासा; विरविक्रम प्रज्वलितकिरणा; परशुपाशधर रावणदेहा; दशक्रोधविन्दु पादनमस्ता; दानवनागा नवरुपदेहा विबुद्धगन सयरशरीरा ॥ कायवाकचित्त ध्यानधरन्ता; किल्विषदेहा निर्मलशरीरा ॥ भवभयहरणा गीतगावन्ति कायवाकचित्त ध्यानधरन्ता; किल्विवर्ष ॥३५॥

ध्यान		*हिमालयया भुमिवासित छ्वाकामुनि जगतमोहिनी ॥ द्विभुज श्वेतबदन त्रिनेत्रहसित मुख रत्नमकुटधारिणी ललितासनसंस्थित ॥ नानारत्न बिभुषाङ्गि वस्त्रालंकार भुषिता नानारत्नादि बरदंमूद्राधरं बिभावयेत् ॥ पिथ्यादी मूलं प्रणमामि श्रीछ्वास्कामुनिदेवी नस्मोतुते ॥*		
सिंहलद्विप	श्रीछ्वास्कमुनी	सिंहलद्विपवासिनीदेवी हेमवर्णगी ललितासिनी; चन्द्रसूर्यवयने सूर्यसुधामा वन्दितकेशा शोभितमकुटा ॥धुँ॥ भवभयहरणा वान्छितफलने नमामि २ श्रीछ्वास्कामिनिचरणे ॥ भुजद्वयधारी त्यवकधारी जय दुर्गातारी पाप संहारी सरधरधारि भवउत्तारी त्रिभुवनचारिणी; मोहनकारी २; सिंधिनीदहिने व्याघ्रिनीवामे परिवृतसंगने दिगस्थितमध्ये ॥ सूरनरनागे; वंन्दितचरणे दुःखितशरणे नोपुरशोभे ॥ शतृगुरुचरणे वन्दितशिलसा त्वंदेवीचरणे ऋद्धिसिद्धिप्रसादे ॥धुँ॥ ३६ ॥		

स्तोत्र		ॐ जाज्वल्यमाना जगतोहिस्तय कल्यान्ते ॥ ज्ञान अदीरत्नमालासर रत्नधारांगुण सागुरोते		
कनकवर्णा	छ्वास्कामुनि	कनकवर्णदेहा एकमुखद्विभुज २ मकुतकेश त्रिणीदेवी ॥धुँ॥ नमामि २ श्रीछ्वास्कामिनी ॥ जगतमोहिनीदेवी २ ऋद्धिसिद्धिप्रसादे ॥धुँ॥ सिंहालद्विपेततरुणी; ललितासनस्थिता; रत्नाभरणभुषिता अतिसुखशोभिता दहिनभुजेद्रव्ये सरधारीदेवी २ वामभुज सव्येरत्न भाजनस्थिता ॥धुँ॥ तरुणीमण्डलमाझे चक्रितस्थिता; सगणमण्डलमाझे चक्रीतस्थिता गगनमण्डलमाझे; प्रमोदितहृदया ॥धुँ॥ श्रीमोहनीदेवी त्रिभुवव्यापिता; सुरनर रिपुभयनाषिता ॥धुँ॥ शतगुरुचरणे वरप्रसादे; त्वंदेवीचरणे ऋद्धिसिद्धिप्रसादे ॥धुँ॥ ३७ ॥	राग मालव	तालमाथ

हयापिष्टासन	छ्वास्कामुनी	हयपिष्टासनमण्डितदेहा महारजत सदृसशुवर्णा ।। धुँ ।। एकवदन सोभित त्रिनयन; सिहलद्विपमध्ये दृधासनी; नमामि २ श्रीछ्वावस्कामिनीदेवी सकलयोगिनी धित्रिदशेश्वरी ।। धुँ ।। दानव पमोरितविरासनि : त्रिभुवन मोक्षमुक्तियदायनि २ दहिनभुज मकुटधारित त्रिष्फवान त्रिभुवन करिवर विनास ।। धुँ ।। वामद्रव्यभुज धारित रत्नरासि सकलसत्व सुखप्रदायनि २ रत्नपवित्रा प्रज्वलितमकुटा निसाचरिगनमध्ये निवासिनि ।। धुँ ।। सिराजरत्ना अभिमन्त्रफल; चतुर्थ गुनज्ञान प्रदायनि श्रीज्ञानबज्रभुज प्रयिसरना ज्ञाननिधिचरन सिरेनमिता ।। धुँ ।।३८।।	राग तरावली	
अतसिकूसूम	अचल	अतसिकूसूम समद्युतिदेहा; विविरत्नमणि ।।धुँ।। तेनाचउआ नन्दविराच्चला नाञ्चयिर श्रीअचलक्रोधवीरा ।।धुँ।। मारचतुरदयू निखिलविघ्नहन्ता; तयनिहितखड्ग तर्ज्जनिपाश ।।धुँ।। विरागचन्द्रतुम्ह दुतिभवभयंकरा; रविशशिजुगरे गगणेनिवारा ।।धुँ।।३९।।	राग कनर्दी	तालएकताल

गहनमध्ये	ध्यान	ॐबायुव्ये चामुन्द्रादेवी रक्तवर्ण त्रिनेत्रा ॥खट्भुजा कर्तिपात्र डमरु खत्वागधरा ॥ पञ्चमुद्राभरण प्रेताशनसंहार भैरव ॥ धोरान्धक शमसानरोहिणा सिद्धा तेरुकजन्तु ॥ अध्यानन भुत? चन्द्र भागानदि कुलिकनाग ॥ द्रोनागिरी पर्वत अजुर्नबृक्षे भुलुखा पन्छि ॥ सुवर्णप्रभाचै त्यदेव तीर्थ शिवलिगं बायुदेवता ॥ दिगपालकोलागिरी क्षेत्रआवन्तुमेघ भावंविभावयेत् ॥		
	श्री दक्षिणकाली	गहनमध्येनिवासिनीदेवी २ निलवर्णागी देवीपिङ्गलकेशा ॥ नमामि २ श्रीदक्षिणकाली चरणे ॥धुँ॥ एकमुखात्रिनयन प्रेतासनी देवी; षट्भुजधारी नरमुण्डमाला ॥धुँ॥ दिनकरकोटि तेजप्रकाशित; नरहतकटिव्येष्टकंकालमूर्त्ति॥धुँ॥ नरशिलकूण्डले; धारितशोभे; असूरविनाशिनी नरअन्तभक्षिणी ॥धुँ॥ हाडाभरणे विन्दुपात्रधारीणी; खत्वांगमुड्ग खड्ग डमरु धारीणी ॥धुँ॥ रागद्वेषमोहमाया शत्रुभयहारिणी; जगतजननी जगतमोहीनी ॥धुँ॥ भुक्तिमुक्तिफलप्रद मोक्षद्वारदेवी; भनयि गणेशराजेन चरितगीता ॥धुँ॥४०॥	राग कडु	तालषटकंकार

स्तोत्र	*ॐ कालिकालि महाकालि शुक्लवर्ण कपालिनी ।। शमसान शक्तिचामुन्द्राय नमामिप्रेतवाहिनी।।*		
रायमहामेघ	रायमहामेघ गन्धर्वनसरि २ स्थावरजंगम; पानराखहुँ ।। हे नवनागसयरा ।।धुँ।। इह जाम्वुद्वीपभुमी कालेकाल कालवर्ष २ करजोरविनति २ उरङ्गमहामेघ; भुणगुल्मलटा वृक्षसत्वपारिते ।। जलधर महामेघ जलधारापूरे; क्षेत्रउपक्षेत्र शान्तिकरिते ।। श्रीहेरुक वज्रंगरुड आज्ञा आगच्छरे महामेघ सर्वनागा ।।धुँ।।४१।।	राग कडु	तालमाथ

निर्विकल्प

श्रीप्रज्ञापारमिता

राग श्रृगारसहज

तालषटकंकार

निर्विकल्प महादेवी ईश्वरीमाता दशपारमिताकार शुभधर्मराया २ निरारम्व निराकार शुंन्यस्वरुपी अभेदिमुर्त्ति विश्वव्यापिनी ॥ धुवा ॥ नमामि२ श्रीत्रिभुवनजनी श्रीप्रज्ञादेवी सत्वहृदि व्यापिनी ॥धुँ॥ सयरसुरासुर वन्दितचरणे पुजितसर्वलोक तुम्हदेवी शरणे ॥ श्रीबुद्धजननी तारणीदेवी अखय निरंजन पञ्चज्योतिरुपीनी ॥ भवदुःखहरणी भगवतीदेवी त्रिभुवनव्यापी पञ्चतत्वरुपी ॥ देशितआदिधर्म प्रकाशित शुभज्ञान संवोधिमार्गे भास्करदेवी ॥ जन्ममृत्यु जराव्याधि सर्वकलेशनासिनी दुरितभय सर्वपापसंहारिणी ॥ जगत विवांच्छित शुभफलदाता अनुत्तर ज्ञानमार्ग प्रकाशितमाता ॥ अभिमत सुखफल दायनीदेवी जरमजरम तुजुपायशरणा ॥ सद्गुरुचरणे शिलेगतधरिया भनयि तुम्हदास्ये शुभज्ञानपुरिता ॥धुँ॥४२॥

धनकरी

वसुन्धारा देवी

धनकरीसागर धान्यवृद्धिमण्डलसमाभेस्थित वसुन्धारा ॥ श्रीलक्ष्मी धनेश्वरी गुननिधि श्रीवज्राचार्यन २ ततोमन्त्रन्यास मण्डलस्थितया; पूजनयालक्ष्मी भवतारुणीदेवी; पीतवर्ण एकमुखषट्भुजया ललितासन ॥ दहिनवर; रत्न मञ्जलिता; वज्रधरसागर गुरुशिरसं ॥ वामकरस्ठितसुर्वणकलशं॥धान्यमंजरिप्रज्ञापुस्तकमणिमन्तशिलश;व्यापिनीधरिता;दिव्यरुपी भवतारुणी चिन्तामणिधारित ॥ दिव्यरुपी भवतारुणी चिन्तामणिधारिता ॥ ज्वोतिमय वामेस्थित वज्रपाणिलोकेश्वर; दहिनेजरमवरुन ॥ ईन्द्रादिदेवगण लोकपालसहिता ॥ श्रीगुरुभाष्कर वज्राचार्यनचिन्ता ॥धुँ॥४३॥

राग ललित

तालझप

ध्यान		*ॐस्वेतवर्ण महादित्म गजःबक्तं त्रिलोचन ॥ चर्तुभुज महानाथं बिज्दुपात्रधरं शुभं ॥ अत्येच परशुचापि जपमालादधानकं ॥ सर्वलम्वोदर वीर मुषकोपरि संस्थितं ॥ नागयज्ञोपवितन्च नागाभरण भुषितं ॥ सर्वसिद्धि प्रदाता च गणाधिपं विभावयेत ॥*		
गजमुख	श्रीगणेश	गजमुख त्रिनयन ताण्डवपदवर नृत्याधिपति श्री गणेश्वरा २ ॥ हेलमणिमकुट रत्नभरणातरुण किरणसंकासा ॥धुँ॥ मारियाविघ्ना मारियादर्प मालिया दुःखविनासिता; मारियामाया मायासंत्रासा मेरुओ पद्मदुःख विनासिता ॥ परशुवाम कुश वज्रखड्ग भिन्दितपर अति दहिनकरा २ मूशलधनु खत्वाङ्गखर्पर कपालफल कछु वामे ॥ विचित्रबक्ता चुतकटिवेसा जटायुक्त मणिमण्डिता ॥ लम्वोदर लम्वोदरशोभा पायल झिमिझिमिवाजिन्ते ॥ रत्नांतर धृतरत्नज्वलित मूखिकमूख अतिसुन्दरा २ विघ्नादत्वा तुमसुखदाता नमोस्तुनमोऽतु श्रीगणेश्वरा ॥धुँ॥४४ ॥	राग धनश्री	तालएकताल

स्तोत्र		*लम्वोदर स्वरुपाय विघ्नंराज विनायकं ॥ गणपतिचं हेरम्भं गणाधिपं नमाम्येह ॥*		
रिद्धिसिद्धि	श्रीगणेश	रिद्धिसिद्धि शुभसेवा सम्पूर्ण २ जय विघ्नेश्वर त्रिभुवन व्यापित ॥ तेनान्ता ३ तेहे३ नान्ता राधव सुचरित चतुरगंनान्तक; प्रदुम विनायक जयविघ्नेश्वर; तेहेनान्ता३ ॥४५॥	राग भैरवी	तालजति
अष्टश्रृंगाचन	गुरुमण्डल	अष्टश्रृंगाचन कनकमणिमय नानारत्नप्रज्वलित २; चतुरद्वीपसगम मध्येमेरुमाभ्धे श्रीगुरुवज्रसत्व विजयिया; सुमेरुकाञ्चन मणिकिरणसयरा भाष्करस्फुट विराजिता; श्रीगुरुभास्कर शदृषनाथा रत्नमण्डल निर्यान्तियामि२; प्रथमतर श्रीगुरुमण्डल अर्चिता चरणकमले शिरेधरिया२; यंकारजात पूर्वविदेहा रंकारजात जाम्वोद्विप; लंअपरगोडावरि वं उत्तर कुरुवेविविधिरत्नसंपुर्ण२; यांउपद्विप रांउपद्विप लांउपद्विप वांउपद्विपं २॥ गजरत्न पुरुषरत्न अश्वरत्न स्त्रीरत्न२; खड्गरत्न मणिरत्न चक्ररत्न वां सर्वनिधान सम्पूर्ण ॥धुँ॥४६॥	राग भैरवी	तालझम्प

अनिल

त्रिसमाधि

अनिलअनल जलजोवनमाझे मेरुमण्डल चक्रराया; वज्रपंजल सलजालसयरा परिभेदि हेरुवराया ।।धुँ।। डामोरुक्षलयिया ।।धुँ।। शुन्यकरुणा आआआ लिंगन हेरुवो क्षलयियार२; वज्रवाराहि आआआलिंगन सम्वरक्षेलयियार२; छत्तिसवीरंविरेश्वर जहि २ तहि २ अष्टश्मशाने ।। अनुहतसर्वदेव वज्रषोडशदिग मेरन्तिवयनसंभावे; त्रिभुवनतुम्ह यकुविराय; त्रिभुवन तुम्हएक विरा २ त्रिनिभुवन नवनाटेश्वर प्रसादे; फलिंग्येरो एकाआकारे ।। अहिनि श्रीसत्गुरुचरणेन्तु रागे छादिंगेरो भावअभावे जरामरण भयवन्धन मोचय; भयमोरु गगनसंभावे ।।धुँ।।४७।।

राग पद्मजली

तालमाथ

कलसार्च्चन		कलशार्च्चन विविधिपंचोपचारा पूजयामितेदेवगणा; विविधिउपहारनृत्यगीतवर ॥ डमरुघण्ठा ध्वनिसुमंगला ॥ ॐ वज्रा मृतोदकमण्डाकिनीसम भावन्तुभावक अद्वयरुप; गणैशसुरभि श्रीलक्ष्मीमहाकाल ॐ सुप्रतिस्थ वज्रे स्वाहा ॥ कनकतरुन मणिरत्नरुचितघण्ठ पञ्चपल्लव उपशोभित; पंचामृत पंचरत्न पंचोषधिः पंचव्रिहितीर्थोदकं ॥२ राजाअक्षत्रदुर्वाकुंत्र सहिता वज्राचार्य मन्त्रन्याश; डाकिनी रामा खण्डरोहारुपिनी विरंबीरेश्वर संयुक्ता ॥२ शत्गुरुचरणे कलशीचिन्ते अभिमन्त्र सुखफलदातुमहो; नमहुँ २ प्रभुअखण्ड मण्डलाकार ज्ञानभाष्कर संदृशा ॥धुँ॥४८॥	राग भैरवी	तालडुजमान
वज्रीनीघोरी	योगाम्बर	वज्रीनीघोरी वेतारीणी चण्डारीणी २ सिंघिनी व्याधिनीजम्वुक उलोकिनी ॥धुँ॥ नमामि २ श्री योगाम्वर ज्ञानेश्वरी ॥२ त्रिनीनेत्रदेवी त्रिभुवनप्रविशे ॥ पूर्वउत्तरपश्चिमदक्षिणेदिगंदेवी २ डाकिनीडिपिनीचउसिकंवोजनी ॥ चतुरदिगंतुम्ह फलनन्तुदेवी २ त्रिनि२ देवीनांचयिदेवी २ हरिहरब्रम्हा इन्द्रअसुरगण; षोदशयोगिनी समरसंभावे ॥धुँ॥४९॥	राग मालश्री	भुयचा तालमाथ

अष्टक्षेत्रपाल	भुयचा	अष्टक्षेत्रपाल दिगंविदिगं भुवने ध्वंसिरमार चतुरगणे; गगने शेषरगगण रुणंभुनकारा; गगनदामोरु बज्रघण्ठवाजियारे ।। हुँ हुँ नमामि पञ्चडाकिनी पञ्चयुगातिज्ञान डाकिनीशरण जुग्येजुग्ता ।।धुँ।। पूर्वउत्तरपशिचमदक्षिण चतुरभुवने२ विघ्नमार विघ्नखन्दियारे वज्रडाकिनी घोरवेतालडाकिनी चण्डालडाकिनी चतुरदेवी ।। सिंघिनीव्याघ्रिनी जम्वुकउलोकिनी खत्वांगपरशु अंकुशहस्ता; डाकिनीदेवि चउसिकंवोजनी घोरदांमरु बज्रकास वदने ।।धुँ।। जिनजननीदेवी डाकिनी तुजुपयिशरणे पञ्चमूद्राआभरणभुषणीया ।।२ खड्गफेटक वज्रघण्ठखत्वांगपात्र; प्रणमामिदेवी श्रीज्ञानेश्वरी ।।धुँ।।५०।।	राग भैरवी	तालझप
नमामिरजिनधातु	भुयचा	नमामि २ जिन धातुकरन्त चतुरमुरुती आलंकृता; पञ्चज्ञान पञ्चधातुकरुपबुद्ध; धर्मसंघ आलयश्वरा ।।धुँ।। तेनाहुँ २ जगतसंसार उधारिया मनोहरनमोस्तु २ पञ्चजिनेश्वरा ।।धुँ।। नमामि २ श्रीशान्तिपूरेश्वर ऋद्धिसिद्धि वरप्रदायिनी ।। दुरितरत्न सर्वपापक्षयंकर दानपूण्येन मोक्षप्रदाता ।।धुँ।।५१।।	राग भैरवी	तालदुर्जमान

नमामिरधर्मधातु	भूचचा	नमामि २ धर्मधातु वागेश्वर षोदशदुवपरि मण्डिता ॥ खोदस तोरन रुनभ्फुनकारा सर्वदेव परिमन्दिता तेनान्ता२ तेहेनान्ता३ ॥धुँ॥ नमामि २ वागिश्वरमण्डल पद्मगिरिनिवासिता; सत्वविमोक्षन दुर्गतिनाशनं प्रणमामिजिन चक्रेश्वरी ॥धुँ॥५२॥	राग भैरवी	तालजुजमान
गजाजिन	भूचचा	गजाजिनउर्द्ध हाठेधरिया कमलकुलिशअंकुवारा२ डमरुकर्ति कुथार त्रिशुला वामखत्वांगकपाला ॥धुँ॥ श्रीसम्वरोद्वय वाच्छलि तुम्हजम्वुरुरेहे ॥२ माररियिरे चापियारे मायासहजशोभा अवताररलिना; पाशब्रम्हमुद्रा द्वादशहाथेधरिया नरशिलमाला; विश्वकुलीश अर्द्धचन्द्रजटायूक्त; व्याघ्रचर्म षट्मुद्रा; आलिढ प्रत्याभैरव चापैयिरेश्वर कालिरात्रिदिनमूद्रा ॥ नीलहित लोहित हरितकनकामय चन्द्रमूख अतिविकरारुरे ॥ छत्तिसं वीरेश्वर नायक त्रिणि चक्रमहावीरविरा; करुणसंसाथे विरंविरेश्वर भुंजयिसयर संसाररुरे ॥धुँ॥५३॥	राग भैरवी	तालझप

शवाक्रान्ता	श्रीबज्रवाराहि	शवाक्रान्ता महासुखक्षरिया चउआनन्ददेहा; त्रिभुवनफलयि महासुखराया; चन्द्रसुर्य दुयिमेरिया ॥ नपापलीना नपुण्यलीना त्रिभुवनएकस्वरुपी २ सर्वविकल्प विघ्नासनिदेवी अनुत्तरज्ञान वरदायनी ॥ अमिताभमण्डल वण्डियारेस्थिति कल्पानल मिवरुपधारी २ करतिकपाल खत्वांगधारी प्रज्ञाज्ञान वरदेहा ॥ दिगंवरा मकुटकेशा चक्रिकुण्डल कण्ठिधारी २ रुचक्रमेखला पायलधारी ग्रीवेरुद्र नरशिलमाला ॥ सर्वतथागत जननीदेवी विरहितभाव अभावा २ श्रीवज्रयोगिनी शिलेगतधरीया गावन्तिसमरसंवज्रा ॥धुँ॥५४॥	राग पञ्चजली	तालजटि
द्विभुजएकमुख	बिद्याधरी	द्विभुज एकमुख रक्तवर्ण २ नगनमकुटके त्रिनिरोचनी ॥धुँ॥ नमोदेविबुद्ध डाकिनी विश्वजननी; त्रिभुवनव्यापितजिनज्ञानदायनी॥धुँ॥ दहिनकरवज्र विरासितदग्धन्ति; वामकरोतक चतुरमारपीवयी ॥धुँ॥ तरुणीमण्डलमाझे उदियानगमणे; रगतपुरवरे शततप्रवेसि ॥धुँ॥ श्रीविद्याधरीदेवी सुरनरमहिस्ता; सकलऋद्धिसिद्धि देहिमेमाता ॥धुँ॥५५॥	राग वैनी	

दिनकरमण्डल	ध्यान	ततः हृदत्सुज्यात प्रर्वद्यहे भोग सदाततत्पन्ना भिनभुतं तयोपरि नपुंसकबीपश्येत ॥ तद्वित परिणता रक्ताउर्द्धपादा उर्द्धदृष्टि कपाल बेष्ठिकला पुष्पमा पासा सर्व्यग्रो ॥ दक्षिणं बज्रहस्ता सर्वावरद विनिमुक्ता बिद्याधरी कर्मयुक्ता सरत्संहार बिग्रहामाण्डार ॥ शोक परिजाकोङ्गण रत्नकुट गृह प्रविशाति मात्मान भावयेत् ॥	राग बराडि	तालमाथ
दिनकरमण्डल	श्रीविद्याधरी	दिनकरमण्डल वज्रज्ञाता २ रौद्रत्रिनिनेत्र दिगम्वरा ॥ नमामि २ श्रीविद्याधरीदेवी २ ॥धुँ॥अनेक ऋद्धिसिद्धि वरप्रदाता; दहिनविन्दु वामशुकियापात्र ॥धुँ॥ विचित्रपुष्पमाला हस्ताञ्जलिया; मुक्तकेशोरौद्र उग्रकान्ति ॥धुँ॥ तुम्हदेवीजगत श्रीबुद्धजननी; डाकिनीमण्डित शिलेधृता ॥ गावन्तिसुरत मंगलगीता ॥धुँ॥५६॥	राग मह्लड	
स्तोत्र		शुन्यता करुणात्मानं त्रैधातुके नमस्कृतं ॥ जल कल्याग्नि तेज नमस्ते बज्रयोगिनी ॥		

षट्भुजएकमुख	बसुन्धरा	षट्भुज एकमुख भद्रघटधारी धानामंजरि पुस्तक वामे; निधिदरीगेम रत्नमंजरि सर्वजिन वन्दित दक्षिणहस्त ॥ नमामि २ श्रीबसुन्धरादेवी रत्नआभरण विभुषित; कनकवर्ण रत्नमकुटामणि ललितासनं दारिद्रहरणं ॥ बुद्धधर्म्मतथागत दक्षिणलोकेश्वरं वामवज्रपाणि इलादेवी; जंवरजलेन्द्र नीलवर्ण वामेवण्डंशुक्लवर्ण ॥ चीविकुण्डली केलिमालिनीमुख इन्द्रचलेन्द्र शुभधारी; चाम्हलछत्रध्वज पताकादिहतं चर्तुदेवी ॥ पुर्वमणिभद्र दक्षिणपुर्णभद्रं पश्चिमधनंद्रा; बैश्रवर्ण गुप्तासुगुप्ता सरस्वतिदेवी चन्द्रकान्ता मोक्षदाता ॥धुँ॥५७॥	राग ललित	
त्रिमुखषट्भुज	श्रीबसुन्धरादेवी	त्रिमुखषट्भुज पीतवर्णदेहा २ दक्षिणकुंकुम वामरक्तानना ॥ ॥ नमामि श्रीधनेश्वरी कच्छपासनीदेवी ॥धुँ॥ त्रिनयनसुन्दरी ललितासनी; कलशोपरिसंस्थित सप्तबृद्धिदाता ॥ ॥ मुलभुज जापमाला द्वितीयदर्पणो; तृतियदधान अभयमुद्रा;॥ ॥वामपुस्तक द्वितीयधान्यमञ्जरी; तृतियकलशा मृतसच्छवा ॥ ॥ दासगणेशराज वज्राचार्यगाओयि; सर्वसत्वाद्धारण देहिमेप्रसाद ॥धुँ॥५८॥	राग सहज	तालजटि

पुर्वदिगस्थभुतसंहारनीदुर्दान्तरिपुसंत्रासनी; कृष्णवर्णमहासाहमुप्रमर्दनीघोरतिष्णखड्गधारिनी।। नमामि श्रीमहाप्रतिसरादेवी दृष्टतर्जनीयोग वज्रधारी; स्वेतवर्णशोभित विश्वकमल वज्रपर्यकं मध्यविजयी ।।धुँ।। दक्षिणदिग श्रीमहामायुरीदेवी विश्वमायापुरितहेमवर्ण; त्राँकारमहाज्ञानोद्भुत चिन्त्तामणिसरधारी ।।धुँ।। पश्चिमदिग श्रीमहामन्त्रानुसारिनी दिव्याभरणभुषनी; चाचुःवदनीय रक्तवर्ण वज्रपद्मासन वरदपाणि ।।धुँ।। उत्तरदिग श्रीमहाशीतवतिदेवी मारादिछेदनी दिव्यरुपिनी; अथीरजर्म्ममायुतसिरमहारक्षाधारीरेसयरभवतारणी।।धुँ।।सूर्यादिनवग्रहविविधिसंपुज्ये दिर्धायुआरोज्यदानप्रति; अष्टाविंशतारादेवी लोकपारसर्वदुषितहरनी ।।धुँ।।५९।।

गन्धमण्डल	श्री पृथ्वीदेवी	गन्धमण्डल मध्ये वंकार संजात २ द्विभुज एकमुख श्रीपृथ्वीदेवी ॥ एज्येहि महादेवी श्रीपृथ्वीदेवी ॥धुँ॥ सर्वरत्न सम्पूर्ण विभुषिता ॥ पीतवर्ण शौम्यरुपी पृथ्वीमाता; शव्यम भयंकर लोकसन्तारनी ॥ कनकभद्रघट वामकरधारीनी; सव्यकरअभय लोकसन्तारनी ॥ दिव्यलंकार भुषितदेहा; हारनोपुर निर्घाष सुन्दरी ॥धुँ॥६०॥	राग मालव	
अतिघोर	महांकाल	अतिघोरवदन अशितांगमुरुति २ खर्परमुण्डमाला व्याघ्रचर्मभुषिता ॥धुँ॥ तेहेहे नान्ता २ नमामि २ श्रीखड्गमहांकाल ॥ दहिनकरतिधर वामत्रिशुल; हाडआभरण भुषितदेहा ॥ सकलमार वर दर्परनिहन्ता; सुरनरवन्दितं भयहरणा ॥ ऋद्धिसिद्धिवर दायकदेवा; त्रिभुवनवीरासित श्रीमहांकालशरणा ॥ ६१ ॥	राग कन्दार	ताल एकताली

ओँकारशिरसि	क्वापेन्वकहृदवज्रसत्व	ओँकारशिरसि आकारमुख हुँकारहृदय वाकारनाभौ; हाकारंपापो पंचाक्षरमन्त्र श्री गुरुवज्रसत्वं प्रणमाम्यहं ॥धुँ॥ नमामि २ श्री गुरुप्रविधर अनेगगुण ज्ञाननिधि ॥धुँ॥ वामवसुंधरा दहिनलोकेश्वर महावैरोचन शाक्यसिंहादि ॥धुँ॥ अष्टमहाभय रोगशोकपीडादि सर्वभयनाशकं; दीर्धायु आरोग्यशुभफलं दानपतेशुभमस्तु ॥ सद्गुरुचरणे शिरेगतधरिया गावन्तिबृहस्पति गुरुआराधिता ॥धुँ॥ ऋद्धिसिद्धि वरदेहिमे सर्वजिनज्ञान भवप्रदाता ॥धुँ॥६२॥	राग रामकरी	तालमाथ
ध्यान		*शुभं भस्मबिलेपनं नरशिल श्रग्धारिणं हुँभवां रौद्राणा शिलष्ट देहं ॥धृतशिर शिवलीशुष्क मुद्राअर्द्धचन्द्र रौद्रावेश भुजंगेपरिवृत्र सुतुनभुषणागंभुवरिं ॥ एकायंबन्हिनेत्र बसुदशसुभुजं भावयेत् नृत्येनाथ नमाम्यहं ॥*		
श्रीपद्मनृत्येशवर		सर्वभाव स्वरुप त्रिभुवन व्यापित २ शुक्लवर्ण एकमुख त्रिनीलोचना ॥ नमामि २ श्रीनृत्येश्वर बिरा ॥धुँ॥ सकल ऋद्धिसिद्धि वरप्रशादे ॥धुँ॥ मौलिजटा मकुट शिरेचन्द्र धरा; अष्टादशभुज करति ब्यार्घ्रचर्मधरा ॥धुँ॥ दहिने गणपति भृगिंभुतप्रेत; बामे नन्दिकुमार अप्सरा सहिता ॥धुँ॥ जन्मजन्म श्रीनातेश्वरशरण; भनयि श्रीकुलिशाचार्यगीत चरिता ॥धुँ॥६३॥	राग नाटक	तालत्रिताल

इन्द्र शिरो	कवयनापुजा	इन्द्रशिरोमणि सुरसहित नन्दन देव करिबर बरा २ ऋद्धिसिद्धि बरःसुमङ्गल; दायनी सकल विध्नविनाशकारिता ॥ नाञ्चयी भुवन विजय सगण गणेश्वरा ॥ धु ॥६४॥	राग तारविल	ताल अष्टमाथ
ग्रहपति	नवग्रह	ग्रहपति रविपति जगत व्यापित करे२ शसिचन्द्र सितजोर नासनं ॥ धु ॥ शुभश्रीवकरिय लोहित अंगालः पितवर्ण बुद्धजगतनाथ ॥ धुँ ॥ भोबिज्येशुमरत हरन्तु दशाफलनाथः चरण सुपुजिन्ते नमामी नवग्रह ॥ रोगपिदन्त भयनासकलदेवा; राखबुकृपामयी जगतनाथ ॥ धु ॥ सुरपरि गुरु बृहस्पति सकलगुरुनाथः२ शुक्लधनित्मर सितवर्णदेहा ॥ ॥ कुग्रह शनिश्चर मरण भयतारित्ते; अतिभिखन्द्र राहु अमृतमय ॥ ॥ शुक्रिति भुतकाय रुज हरन्तु केतुवेः अष्टविंशति नक्षेत्रमण्डला ॥ ॥ भनति द्वादश राशि चक्रपरिवेस्थिताः रगन मुलेति धर सर्वसंपदं ॥ शुवर्ण रुपरत्ना दिपिरे संखभाजनः उरतिस्थ पादार्ध पुजनीया ॥ ॥ तिथि कर्णमान्त्रज्ञ परमहितकामः प्रणमामि नवग्रह मण्डल शरणा ॥ दानपतिशुभ मंगला आयुआरोग्य संप्रदं ॥६५॥	राग ललित	ताल झम्प

रक्तवर्णएकमुख	भीमसेन	रक्तवर्णएकमुख त्रिनेत्रद्विभुजा २ दहिनभुजगदाहस्त महावीरवरं ॥ नमामि श्रीभिमसेन परमेश्वर॥धुँ॥ वामभुजअभयमुद्रा रप्रत्यारिधा; जगतसंसारलाभफलप्रसादसिद्धित्वं॥ जगतमनोवाँच्छित सिद्धिफलदेहिमे ॥ पञ्चपाण्डवसहित सुन्दरीदेवी; अर्थलाभपूर्णराय शुभमंगल; शतृगुरुचरणे प्रसादसिद्धिमे ॥ भावंभावचरणे भिमराजोनमामि; पद्ममारेगिरिस्थीतवज्रोभवाचार्य; अमृतप्रभदेव विरचितगीतभीम; येनसुमंगलसर्वलाभ सिद्धिभवन्तु ॥धुँ॥६६॥	राग सहज	तालजति
बज्रमय भूमि	बज्रस्थापना	बज्रमय भुमि बिशुद्धये : मण्डलमेदनी बज्रिभव बज्रबन्ध हुँ २ जा ॥ सप्तसातल भुमि निबासये मारसयर संत्रासंत्रासकरे ॥ धु ॥ शुम्भनिशुम्भनि हुँ हुँ फट् २ गृन्ह २ हुँ हुँ फट् गृन्हापयर २ हुँ फट् को ॥ आनय हुँ भगवन विद्याराज हुँ फट् २ च्छेदय २ अरि च्छेदय ॥ जा ॥ हाथकरा जिय चित्त उच्छिय्य बज्रपाकार हुँ २ ॥जा ॥ अष्टडिग मार परायतरेश्वर सर्वविघ्न कृत क्षेदय को ॥ गगनं निरावन्ध कुलिश निवाश्य बज्र वितान हुँ २ ॥ जा ॥ बज्र पंजल हुँ प हुँ २ ॥ ज्वलिता बज्र सर जारता संत्रा ॥ धु ॥ को ॥ क्रिदन्ति मन्दलाये विरेश्वर सर्वसत्वहिया प्रमोद करे २ ॥ जा॥ शतृगुरु आज्ञाशिलेगत धरिया भनयि लीलाबज्रभूमि शोधिरे ॥ धु ॥६७॥	राग मधुमत	ताल दुर्जमान

रागमाला		*विनोननादं यितमगलजानकाल ॥ जालांजलिवि गरुडश्रुधरा ॥* *हेमद्युतिदन्ति उत्तनखाकमुद्रा ॥ कर्णातिकाकं कलितसुर्वणा ॥*		
अओननि	चण्डमहारोशन	अओननि हितवाम जानुरेहनुसर्व्य खड्गकिरत्ना मारसंत्रासा २ रागद्वेषमोह वन्दिरेपाशा त्रिभुवनराया अचलवीरा ॥धुँ॥ नमामि श्रीचण्डमहारोशन जातंमृत्यु भनिच्छेदिता; विश्वनाथ विश्वव्यापित वीरविक्रम महाक्रोढराया; जातमृत्यु भनिच्छेदिता ॥ अतिभिषनागा उग्रप्रचण्दा द्रष्टकराया विद्युतकिरणा; पिण्डितअर्धरा केकरनयना वैरिसंत्रासा राखहु शरणा ॥ माधवमाया पूरनरव्रम्हा रुद्रपिशाचा पाण्डवभरणा; समरसमाया रागविमोहा ज्ञानरागसं मोहितदेहा ॥ रत्नाभरणा प्रज्वलितमौली केयूरनोपूर रुणभुनकारा; सुरनरनागा वन्दितचरणा रायसूरेश्वर अचलवीरा ॥धुँ॥ ६८ ॥	राग कन्दी	तालषटकंकार

पुर्वद्वारे

राग भैरव

ताल झप

पुर्वद्वारे येमान्तकरे फलयी अनन्तर क्रोधरे २ मारयी इन्द्रादी शगन परिवार नाशय मारारी वृन्दरे ।।धुँ।। घ घ घाटय २ सर्वदुष्टरे किरये हुँ फट् पापरेः श्री बज्रसत्व आज्ञारे कायूवाक चित्त किलये हुँ ।। राग ।। दक्षिण द्वारे प्रज्ञान्तकरे फलयी अनन्तरे क्रोधरे २ मारयी यमादी शगन परिवारनाशय मारारी वृन्दरे ।। धुँ ।। राग ।। पश्चिमद्वारे पद्मान्तककरे फलयीअनन्त क्रोधरे २ मारयी वरुणादी सगन परिवारा नाशय मारारी वृन्दरे ।। ।। राग ।। उत्तरद्वारे बिघ्नान्तकरे फलयी अनन्तक्रोधरे २ मारयीयक्षादी शगन परिवार नाशय मारारी बृन्दरे ।। ।। राग ।। इशानकोणे अचलबीरा फलयीअनन्त क्रोधरे २ मारयी त्रिशुलादी सगन परिवारा नाशय मारारी बृन्दरे ।। राग ।। अग्नेयकोणे तर्किराजबीर फलयीअनन्त क्रोधरे २ मारयी अनुरादी शगन परिवारा नाशय मारारीबृन्दरे ।। ।। राग ।। नैरृत्येकोणे निलदण्दः बीरा फलयीअनन्त क्रोधरे २ मारयी राक्षसादी शगनपरिवार नाशय मारारी बृन्दरे ।। राग ।। वायुव्यकोणे महावलबीरा फलयीअन्तर क्रोधरे २ मारयी पवनादी शगन परिवारा नाशय मारारी बृन्दरे ।। राग ।। उर्द्धद्धारे उस्नीसःकरे फलयी अनन्त क्रोधरे २ मारयी ब्रम्हादी सगन परिवार नाशय मारारी बृन्दरे ।। राग ।। अर्धद्धारे शुम्भराजवीरा फलयी अनन्त क्रोधरे २ मारयी नागादी सगन परिवार नाशय मारारी बृन्दरे ।। राग ।। दशदिग दशवर हुँ कारुरे प्रणमामी दश क्रोधरे २ आसापुरे दानपतिरे मार विघ्न निवारुरे ।। राग ।। श्रीबज्रसत्व आराधीयारे अनुत्तरसिद्धिमोक्षप्रदाता ।। धु ।। राग ।। ६९ ।।

प्रमोदित

श्रीचक्रसम्वर

प्रमोदित आदिदशभुमी सुन्दरी सनमेरुमण्डल संस्थितरयना २ द्वादशभुज चउ वदनसुशोभा वज्रवाराहि आलींगना ॥ हुँ हुँ हुँ ३ दशदिगभुवने मारसयर सम्वर वोधियारे २ द्वन्द आलिंगनअद्वय स्वभाव नाञ्चयि दानेसम्वराया २ कूलिशघण्ठ गजचर्मत्रिशुल करतिडमरु शुशोभिता ।। मध्यपुरिशत कपालखत्वांगे पाशपरशु ब्रम्हशिलेधरा ॥ पञ्चजिनवर मकुटआलंकृत षट्मूद्राआभरणभुषिता २ आलिकालिद्वय आलिढचापयि व्याघ्रचर्मनिवेशण कृष्णतनु ॥ नरशिलमाला आरम्भ श्री सम्वरदिव्यचक्षु त्रिणिकरुणहृदया ॥ जरमजरम मुरु तुजुपयिशरणे गावन्तिपरमाथ्य वज्रगीता ॥धुँ॥७०॥

राग मधूमत

ताल दुर्जमान

वैंभवबसुन्धारा

श्रीबसुन्धरादेवी

वंभव बसुन्धरा पीतवर्ण एकमुक विचित्राभरण भुषिणीया ।। कनकभद्रघट वामकरधारी दहिन अभयमुद्रा श्वेताम्बरा ।। ॐ वज्रिभव हुँ आर सातले ॐ वज्रिभवदृढतिष्ठ मेदनी ।। ॐ मेदनी बज्रिभव वज्रवंध हुँ विश्वभरन सयर विश्वर भवन्तु ।। ए हेहिमातरि इन्द्र मेघ पुजा गाज्यन्ति वज्रसत्व पुजयारे; मण्डल कर्म सुसाधय २ ह्रीं ह्रीं हुँ हुँ स्वाहा ।। नौमि श्रीसाधन दुरित पातालवृन्दे विविधि उपहार पुजयामि २ श्री शाक्यसिंह मुनिमारवर भंजन देवी श्री बसुन्धरा मण्डल लिख्यामि ।। शतगुरुचरणे कमल शिलेगतधरिया २ गावन्ति आचार्य संघ सा २ भुमि शोधन विधितस्य फलपदं सर्वसत्वसंसार तरणे ।। धुँ ।।७१।।

राग ललित

तालझम्प

निर्माणम्बुज मध्येगत कलशाः पञ्चामृत रस पुरिता २ विधयम गर्छित पञ्चपल्लवा नीलवर्ण रजशिर शिक्षापियाः ॥धुँ॥ हुँ हुँ हुँ करहुँ बज्राचार्य मन्त्र विन्यासिता कर्मवज्री सहितन प्रज्ञास्वरुपी २ बज्रशिक्षा सपरिपूर्ण हेतुनाः भवसमुद्र शरण त्रिशरणा पुर्वदलगत पञ्चसुत्रसरंजिता पञ्चविशतिभेदितबुद्धकाय २ दक्षिण दलगत बज्रशंख समरुपः त्रिभुवन समरस स्वपाय विशुद्धि ॥ पश्चिमदलगत शंखसंशोधिता धवरवर्ण भाजना २ उत्तर दलगतः घण्ठघोषणादिताः ज्ञानस्वरुपिनी विश्वजननी अग्न्यादि दरगत स्वेतपितारुना श्यामवर्ण रजस्थापियारे २ पुष्पा बिन्यासिता : विधमय पुजीता प्रणमामी बज्रसत्व शिरंशोधिता ॥ ७२ ॥

बज्रधर	सुत्राधिवासन	बज्रधर पञ्चबुद्ध रायगतवर भुप समुन्द्रा २ ॥ जा ॥ धुँ ॥ मण्डल सुत्रप्रार्थना साञ्जलिखमि स्वभावसम ॥को॥ साश्वतब सुत्रमे प्रयच्छ मण्डल सुत्र सं प्राथयामी ॥जा॥ सिंहासन स्थित पुर्णचन्द्र द्युतिवर अभिमन्त्र सुखफलदायणी ॥ को ॥ रत्नाधृक पीतवर्णः दहिन बरदकर अश्वारुध विराजिता२ ॥जा॥ महामण्डल भूमिसुत्र रायहुँ २ आलोलिक दहित ऋद्धिसिद्धि ॥ जा ॥ धर्मवज्री रक्तवर्ण मयुरासन स्थित : ध्यानमुद्राधर अम्बुनाथ ॥ जा ॥ शुत्रपातन मेशोधय : दानपति सरक्षेता ॥ को ॥ कर्मवज्री जिनवर अभयमुद्राधर गरुडासनस्थित रयना २ तत्वज्ञान सिद्धिवर महामण्डल सुत्रयामि ।धु॥७३॥	राग मधुमत	ताल दुर्जमान
समिरय	खचवीर	समिरय हुँ क कमल निचलजल सुवर्णचल जल वरे प्रस्फलित दिनमनिसायर गौरीः मस्तक तनुयुग रिछेगति ॥ धुँ ॥ ओँ आः हुँ ३ ओँ हुँ २ मुण्डमाला व्याघ्रचर्म भुषित षट्मुद्रा : हाँ हाँकार भैरव वला २ ज्वलित कुलिशघण्ठ मृदुत र द्विभुज; हेरुक आलिंगन आलिद पदं २ विश्व विदकसिय अर्द्धचन्द्र नर; शंख शेखर स्वहिय नादरं २ दशदिग प्रशदिरे मारविरेश्वरः त्रिवक्तभिषनबेदमुखं २ समरस महा सुहबोधियना नाटकर गण समरभुवे २ अवधुव प्रविशयि सहज श्रीसम्वर अनुत्तर गगन समरभुवे ॥ ७४ ॥	राग मधुमत	ताल झप

पूर्वदिगाञ्चन

दिग्पूजा

पूर्वदिगाञ्चनचन चन्द्रग्रहश्मशाने देवीब्रम्हायनि हंसासनी ॥ भैरवमहाकाल गणपतिकुमार वीरक्षक्षेत्रपाल यक्षयक्षंणी ॥धुँ॥ पूजियारे ममअलिवलिरुधिरां चौसथियोगिनी मातृगणा २ ॥ रुद्रभुवन श्री अष्टश्मशाने भुतप्रेतपिशाचगणा ॥धुँ॥ उत्तरदिगाञ्चन ग्रहोरश्मशाने देवीरुद्रायनी वृषवाहनी ॥धुँ॥ पश्चिमदिगाञ्चन ज्वालांकूलश्मशाने देवीइन्द्रायनी गजवाहनी ॥धुँ ॥ दक्षिणदिगांचन करंकरश्मशाने देवीवाराहि महिषासनी ॥धुँ॥ अग्नेकोणे घोरान्धकश्मशाने देवीकौमारी मयूरासनी ॥धुँ॥ नैऋतेकोणे लक्ष्मीवन्तश्मशाने देवीविष्णुवी गरुडासनी ॥धुँ॥ वायुव्यकोणे किरंकिरिश्मशाने देवीचामुन्द्रा प्रेतासनी ॥धुँ॥ इशानकोणे अट्टहासश्मशाने देवीमहालक्ष्मी सिंहासनी ॥धुँ॥७५॥

राग गन्धारभैरवी

ताल दुर्जमान

चन्द्रग्रहोशमस्वाने

राग भैरवी

तालषटकंकार

चन्द्रग्रहो शमसाने शीलवृक्षा वासुकिनागा गर्जितमेघा २; ग्रहोशमसाने अश्वेकवृक्षा घुनितमेघा तक्षकनागा ।।धुँ।। इन्द्रयम जलेन्द्र वन्दिवायुराक्षसा दिगंविदिगं वलिदेवतीरे; ।।धुँ।। अष्टशमसाने छत्तिसं वीरेश्वर नान्चयि सहजआनन्दले ।।धुँ।। कंकलिघोरावर्त्तितमेघा ज्वालांकुल शमशाने कर्कोतकनागा; ।।धुँ।। करवलिवारा वर्तकमेघा शरसिजनागा चुतकबृक्षा ।।धुँ।। अट्टहाशमसाने संखपालनागा प्रचण्डमेघा वर्तमहिरुहा; ।।धुँ।। लक्ष्मिवन्तशमशाने करजकबृक्षा घुनितमेघा महापद्मनागा ।।धुँ।। घोलान्धकशमशाने पटुकबृक्षा अनन्तनाग पुरनरमेघा; किलिकिलिशमशाने अर्जुनबृक्षा कुलिकनाग वर्षनमेघा ।। द्वादशभुजा द्वादशनयना चर्तुब्रम्हवदना द्वादशनयना;।।धुँ।। भनयिकर्णपा राखहु शरणा कालिरात्रि रिपुचापयिवदना ।।धुँ।।७६।।

नमस्कार		ओं नमः श्रीगुरुबज्रसत्वाय् ॥ ओं नमः श्रीचक्रसम्वराय् ॥ ओ नमः श्रीपद्मनृत्येश्वराय् ॥ धवरशुधामय ॥ क्वला ॥ कमलवरे समुदित २ तेज ॥ जाव ॥ शहस्रकरे ॥ समरस२ भाव ॥ क्वला ॥ समाधिगुण ॥ अद्वय २ ज्ञान ॥ जाव ॥ सुशरीरमन ॥ जिनवर २ भुषित ॥ क्वला ॥ देहवरे ॥ तथता २ संयुक्ता ॥ जाव ॥ करुणरस्ये ॥ समुदित २ विराशित ॥ क्वला ॥ धर्मतनु ॥ त्रिभुवन २ जयंजयं ॥ जाव ॥ कुलिसकरे ॥ स्वनित्यंति ॥२॥ भाव ॥ कोला ॥ श्रीबज्रसत्व परमगुरु ॥ जाव ॥ ७७ ।		
बामकर		बामकर नरखत्पर पायलनरभेदिया २ बज्रकर मुष्टिदृध मारचउ दर्शने ॥ धुँ ॥ त्रिभंगे नामयिरे २त्रिभंगे नामेतेनांचै ॥ हेबज्राराया ॥ धुँ ॥ निलवर्ण निलकण्ठिया सत्ववर सुकरुणा रक्त त्रियनयन विकर लसुबदन ॥ धुँ ॥ लोरललित जिक्त मुद्रा ॥ अद्वय रस पिवयीघन नवमुह तथा शुकाय ॥ धुँ ॥ गगनमय सर्वभय भासुर सुबदन ॥ धुँ ॥ फलयि संहारणे वाजयि दमरुवा २ भनयि संगोदारी त्रिभुवन सहेरुक ॥धु॥७८॥	राग गन्धार	जप वाँछहिए छु

प्रविशतु	मण्डलप्रवेश	प्रविशतु भगवन महामोक्षेपुरवेः देशयि अनुत्तर बोधीपदं २ जरामरणंभय बन्धन मोचय २ परमामृतमय परमगुरु ।।धुँ।। यहेहिवत्स महायान रयो तुम बोधीचिन्तामृत पानरन्ते २ देशयिक्षेपहम गोचल गुहेये तथतानुतर बोधी पदं २ ओ सर्वतथागत पुजनयामृत पापतनु मञ्जुपाश देशित परिवेस्थित कमलकुलिश परिभामकरे ।।धुँ।। कुसुम उदकम कुटाशन कमला जिनकुल समय आचार्यपदं मन्त्रअञ्जन दर्पण शरक्षे पदम वर गतिपरिभामकरे ।। धुँ ।। नमामी २ श्रीचक्रसम्वरा गुरु वाकचित्त धृध धरिया शतगुरु चरनेकमले प्रशादे अनुत्तरबोधिपदं ।।धु।।७९।।	राग भैरव	ताल झप
सहज	गुह्याभिषेक	सहज सरोरुहे हेरुकराया २ त्रिभुवननाथ देहिमे विरास्या ।। भुजयी महारस गुह्याभिषेक २ कमलकुलिश संयोग संभाव ।।धुँ ।। ज्ञान स्वरुपिनीदेवी विश्वरुपिनी २ क्रिदन्तिरमने महासुखदाता ।। धुँ ।। उर्द्धद्विषदानाकारी रुधिया प्रविशे पानविन्दु रन भेदिया गय् हुँ; गुरुप्रशादे अनुत्तर क्रिया २ देहिमेतारण संसारसमुद्र ।। धु ।।८०।।	राग सहज	ताल माथ

त्रिणिरोयन		त्रिणिरोयन चतुव्रम्हविहारा २ रविशशि चापिरेचार्यरै; वैथारामुहोम करै याहोमेनहि चउमारा ॥धुँ॥ रागद्वेषमोहो नहिचउमारा ॥ रागद्वेषमोहोन व्यहिरैच्छादिया ॥धुँ॥ वामदहिनकरे सुरुवारेपानि; ज्वलितवज्रानल आ हुँ तिजोइया ॥धुँ॥ प्रज्ञाधण्ठध्वनिर उपायिलवज्र; वज्रप्रवनधनचिय संभोग्य ॥धुँ॥ कर्णवोरज्यु अभ्यन्तलहोमे; कलहुप्रतिच्छा मण्डलहोमे ॥धुँ॥८१॥	रांग भैरवी	तालरूपक
कोलयी		कोलयिरें थिंयंवोंरां ॥ मुमुनिरेंकंकोंरां; घनकपिं थिंउंवोंरां; करुनक्रियां यिनरोलां २; मरयज कुंन्दुरुं वांजयींयां२ दिदिमंन्त्रहिन वांजंयीयां; तहिवरुखां जंयिगांध्यें; मयनापिंजंयियांयियां २; हरिंकालिं जंलं सांलींजरं दुदुवांनु जंनयांयियां ॥धुँ॥ चंवुसम कंस्तुंरिसिंल्हां; कर्पुररांवनं यांयियां मारयि इन्धन सारिकर; तहिवरुखांजं यियांयियां ॥धुँ॥ प्रमुखक्षंत्रं कंरन्ते; शुद्धासुद्धं नंमुनियांयियां; निरशुह अंगंचंन्द्रावंयियां; तहिंज सुरांवंन प्रंणमांनिंयां; ॥८२॥	राग कोलयी	

बामादहिणी	जयवाच्छलीथि	बामादहिन यदुयीघरनी २ माभ्केविराविरासयी ॥ महासुखरिता भुज हुँ ले जोयीया ॥ सहजसनेहा २ सयरविसयरा ॥ समयरसकरिया ॥ धुँ ॥ एकेध्यावयिया ॥ अमिरयिया २ आवरेपानीगा ॥ गाधलिया ॥ धुँ ॥ गयणे प्रवनेचिय मिरयिया २ कायवाक चित्त लिनकरिया ॥ धु ॥ पापयिरे गुरु पाय प्रशादे भनयि वाकबज्र शुन्य समाधि ॥ धुँ ॥८३॥	राग श्रृंगार	ताल माथ
धरधर		धर धर दुर धार धरे धारय धारय चक्र शिरे; मद मद बज्र घृक समये कुंदुरु योग विरे वरे ॥ कुरु कुरु बज्र धर्म समये; त्वं आलोलिक कर्ण वरे ; २ ॥ कुण्डलि कुण्डलि देह धरे ; सुसमाकर सित कमल धरे; बज्र सूर्य अज्ञान तमो वृध सय समर दातु मह २ कण्ठिकमार धरे रतना धृक वरे बज्र शिरे शाश्वेत निस्वभाव परम; शाश्वेत सहज स्वभाव परम २ एहि एहि जिन जिक समरे काय नि वन्धन रु चक्र धरे ॥ हुँ हुँ ह्रि ह्रि प्रज्ञाधृक सुगतो; मेखल मण्डित प्रवनव सुखे; हुँ फट् आदि नचरण वरे; प्रणमामि सुरत बज्र शिरे ॥ ८४ ॥	राग विभास	ताल माथ

स्तोत्र	नमस्ते चक्रसम्बराय सर्वज्ञज्ञान सदेह जगदर्थ प्रशाधकं चिन्तामणि द्रबिभूतं श्रीसम्बरं परमेश्वर ॥		

हाडाआभरण	छाविहियेके	हाडाआभरण क्रियारेसम्वर धरयिकम्वालिरससा २ तुम्हवोरन्ते मण्डियेश्मशाने मकुटकेशी दिगम्वरा ॥ रेरेमारुव सम्वररैया सहजसुन्दरी मोरुकोला; हमचिराहिरे वज्रबाराहि; फेन्दामहीरेमोरुकोला ॥ ॥ सालीरेभोयन वर सुहमयने कर्पूर भयन्तीताम्वोला; गगननिलावर्ण वन्दिरेजोरा मेरुमण्डलभवरीना ॥ ॥ त्रियधनुखत्वांगे छादिंगेरोसम्वर प्रयीशयिशुन्य भवतार २; हमविराहिरे वज्रबाराहि तुम्हविणुदेख हुँ अन्धारा ॥ धुँ ॥ गावन्तिलीलावज्र यिया आलिंगन शतृगुरुचरण आराध्य ॥ समयआनन्दे फलिंगेरोमण्डल सम्वरवज्रबाराहि ॥धुँ॥ ८५ ॥	राग खडगीगी	तालत्रिताल

चक्रि चक्रि	मुद्र क्वखारे	चक्रि चक्रि मोदिरे ः दाहिनी चण्डारी २ ॥ हिथ्यंकार अमोघसिद्धिः रक्तवर्ण शोभावे ॥ धुँ ॥ जैया २ हेरुकबज्रबाराही ॥ खनेहुँनेच्छादीगेंरो निलवर्ण स्वभाव ॥धुँ॥ पञ्च तथागत स्कन्धेधारी इन्द्रि २ सर्वसत्वउधारिरेः चक्रीर सिले ॥धुँ॥ हिंथ्यं कार अछटि हेरुक सहज स्वभाव प्रज्ञोपाय उधारिरे डमरु खत्वाङ्गे ॥धु॥ मोरु श्रीहेरुक रुद्र मून्द्र कमाला गें भनति गोस्वामीनि हेरुक वर्ण स्वभावे ॥धु॥ ॥८६॥	राग गौडगिरी	ताल जति
ध्यान		*ॐ नमो श्रीचक्रसम्बरायः भगवतंकृष्ण वर्ण चर्तुवक्त प्रतिमुखं त्रिनेत्रं द्वादशभुज आलिधासन संस्थितं महाभैरव कालीरात्यातर समय बज्रबाराहि आलिगण भावयेत ॥*		

चक्रिकुण्डल		चक्रिकुण्डल कण्ठी रो चक्रमेखल भूषित गृव्येरुणदल नरशिलमाला २ सरोचक्रचक्रिरैया भस्मविभुषित गगणन्तुहुरीवन्धुरिवारा ॥ अम्वुशशि हेरुओदेहमोरुकोला जुगेनाथ सहज उरोरा; वज्रकरोटक हाठेधरिया कन्थेथिल हुँ खत्वांगे; संपुटयोगीनी कमलविहासिंगेरो महासुखमेरिप्रसादे ॥ वज्रवाराहि आलिंगनसम्वर नाञ्चयि वहुवृहलभंगे; वाँञ्छिलि कोलयि क्रिदन्तिहेरुओ अर्द्धभुवफलनंप्रसादे ॥ सहजसु मैत्रीरैया गावन्तिकर्णपा हेरुओचरणप्रसादे ॥ प्रज्ञाआलिंगन हेरुकनीलवर्ण वीरासयि शुन्यकरुणा ॥धुँ॥ ८७ ॥	राग खडगिरी	तालएकताल
सुप्रतिष्ठ मण्डल	छिन्नुया घाः	सुप्रतिष्ठ मंदित मण्डल चक्रे २ उछित छत्र पताक वितान ॥ सुप्रतिना दित तुरिय मत्यकं २ तदनुचगीत वरेन मनोग्य ॥ धुँ ॥ पञ्च बुद्धात्मकं सर्वज्ञ ज्ञोय २ पग्य कुनात कुचित्त कुदिव्य ॥ धुँ ॥ जातहियकु महासूहनाम २ नृत्यन्ति गीत वरे न न रोज्ञे ॥ धुँ ॥ श्रावक यान मशिषित भिक्षु २ मर्थ चलि चल भद्रचलिय ॥ धुँ ॥ बुद्ध चरीचरवूद्धगुनेक ॥ यकु महानिदान भविष्य स्वयंभू वधेन्ती यन जरापरि मुच्येकि तेनबुद्ध २ वोधि विभावन याविपरित; इदंसकरप्रमोद ॥ तेना हुँ ३ ॥ ८८ ॥	राग देसार रामकली	ताल जति

हरसिल		हरसिर सिल मुकट किरत्न मनिभासित चरण योगा २ सोहियं वज्रसत्व त्वं परमेशवर प्रदुम पद आहा हा ॥ धुँ ॥ गाधवसूनिवहपृथिकं तथागत दहेधर ॥ धुँ ॥ चारितु फलन चालिगुहेगत पद्मयोगा ॥ धुँ ॥ ८९ ॥	राग गन्धार भैरव	ताल झप
त्रिभुवन		त्रिभुवन ज्वलित मुरति अनुरागेन विनयन्ति आ हाँ हाँ ॥ धुँ ॥ नान्चयी बज्रसत्व परमेश्वर लिनवन्ति लक्ष्मी सहस्रकिरण दशासूर्य हासवेति ॥ धुँ ॥ वहुविहरुप विसहर्ष अनुरायन सत्यवती ॥ ९० ॥	राग चौतार	ताल झप
उदितातर	धरधरया घा	उदितातरयन पवनदुता २; वरसुदामरुक काकलिता ॥घोरदुष्टर भयनिसाचलिता २; अखयनिरञ्जन मोक्षकृता ॥धुँ॥ दिनकरमण्डल मध्यगता; देवासुरनरशिर नमिता ॥धुँ॥ दग्धारिअरिभय प्रतिहन्तार२; करुणमृत शस्य विक्रिताया ॥धुँ॥ गावन्तिपवन परिगुरुभगता; वज्रबाराहि तुजुशिरेनमिता ॥धुँ॥ ९१॥	राज बिभास	तालमाथ

त्रिहंदाचापयी		त्रिहंदाचापयि जोगिनीदेवी कवाली २ः कमलकुलिस घनकरहुनवियारे ॥ धुँ ॥ जोगिनी तुम्हविनुखनेहुने विजयीया २ः तोरामुह चुंवियारे कमरसपिवयि ॥धुँ॥ क्षप हुँ जोगिनीरेनजायिः मनिकुलहियारे ः ओदियानसमाने ॥धुँ॥ साश्वत घरेघरे कुञ्चि कुतारीः२ चन्द्र सूर्यदुयिपक्षनभंद्रा ॥धुँ॥ भनियि गुडालिकुन्दुवीरा; नरयनारि माभ्के उभनवीरा ॥ धुँ ॥१२॥	राग पद्मञ्जली	ताल झप
त्रिणिरोयन		त्रिणिरोयन चतुव्रम्हविहार २ रविशशि चापिरेआचार्य; वैथार ॥धुँ । होम करेया होमेननहि चउमाला २ रागद्वेष मोह वन्दिरे च्छादिया ॥धुँ॥ वामदहिन करे शुवारे पात्रि २ जोर यि वज्रानल आुहति जोहिया ॥ धुँ ॥ प्रज्ञा घण्ठा उपायीरेवज्र २ बज्रपवन चियसम्भोगे ॥ धुँ ॥ कर्ण वोतरे अत्यन्त होम २ करहुप्रतिष्ठा मण्डल होमे ॥ १३ ॥	राग गोकुदहन या घा	ताल झप

ज्वलितवज्रानल	श्रीचक्रसम्वरयागु	ज्वलितबज्रानल श्रीचक्रसम्वरः हुँकारोभव जिह्वाजव प्रमाण ।। मांसाहुति मद्यमांस संयुक्ता पञ्चसारि मद्यमांस भक्षन्तुः ।। खखखार रे ग्वकुदहना पञ्चामियारसअरिना ।। श्रीबज्रयोगिनी रामा खण्डरोहा रुपिणि ।। पञ्चजोगिनी छत्रिसंविरेश्वर मण्डल कलशकिलिकिलायमान ।।धुँ।। डमरु घण्ठाध्वनी प्रमुदित वाजियारेः दानपति विघ्नविनासिता ।।धुँ।। योगीनीपञ्चदेवी पञ्चमध्यतत्पनाः भवन्तु शुभशान्ति पुस्तिया ।। मारविनासन रक्षसयरा अभिमन्त्र सुखफल मोक्षभवन्तु ।।धुँ।। सर्वसिद्धिवाक्य जज्ञेजागना कराहुतिआचार्य शान्तचित्तसा ।। परमाहुतिफल यानिसयरा अनुत्तर ज्ञानसत्व मोक्षप्रदाता ।।धुँ।। ९४ ।।	राग मधुमत	ताल एकताल
कोयिरेवंशा		कोयिरेवंशा वाजिरे विना अनुहत सर्व देव त्रिभुवन लिना ।।धुँ ।। अनुभव जिरे हेरुक रैया २ भेदिरे ऋद्धिसिद्धि रोहि प्रसादे ।।धुँ।। गंगा यमुना यदुयत ति गगन शिखर माझे प्रचन हेन्दोरा ।।धुँ।। उदिगे रोचन्दा रवि अष्टाङ्गे शोशिरे रविशशि गगन दुवारा ।।धुँ।। पवन पञ्चायिरे ।। यकुक्षरे वंधा विपरित करुणे दारुक सिद्धा ।। ९५ ।।	राग कडु	ताल झप

रागमाला		*नीलंजनरे रुचिभिषनभीमुर्त्ति ॥ आकाशस्वरुप बहुबलचन्द्रकेश ॥* *उग्राक्षनंत्रय कलालमूख ॥ कपारी श्रीभैरवं सकलमातृकागणगनाथं ॥*		
ॐ आहुँफट्	बलिपूजा	ॐ आ हुँ फट् अन्ते स्वाहा मन्त्रं विशेखउचारुरे २ पूजापूजित पूजसंभावे तत्वरुप संभवन्तुरे ॥ खखखाहित अलिवलिपूजारे घघघाटयघाटय विघ्नहरे; पंचामियारस पञ्चशारीरे पञ्चज्ञान सर्ववलिना सर्वयक्षराक्षसं भुतप्रेत पिशाचमातृका अपश्मारुरे; डाकडाकिन्यादि अष्टश्मशाने इदवलिगृहन्तु गृहन्तुरे ॥ समयाआरक्षे मोक्षसिद्धिरे; सर्वसुखसंपद भवविसुधिरे; जथैव २ भुजंशपिथवरे जीघ्रन्तुमातृका भवन्तुरे ॥ दानपति सर्वकार्य सिद्धिरे मनोरथ सर्वसुख पदशान्तिरे; आरसंसारे तथागत वचने स्वहाहायंकार भवन्तुरे ॥धुँ॥ ९६ ॥	राग गन्धारभैरवी	ताल जति

हुँहुँ देह	खापुछाय	हुँ हुँ हुँ देहधरु संसारभयतरु २ द्वंद्वआलिंगन योगधरु ॥ हेवज्रा तुम्ह तेनाहुँ हुँ हुँ हुँ २ तेना तेते हुँ हुँ हुँ हुँ सुरनरवन्दित चरणवरे; कुसुमविलेपन देहधरु ॥ भावविमोकुत विसेहंसा; तुम्हगुणआ कोटियारे; नमामि २ श्रीहेवज्रा तुम्हगुण आपृथियारे ॥धुँ॥ ९७ ॥	रागविभास	तालजुजमान
विविहविह		विविहंविहनुलेमा रविशशिवदने २; देवानरअसुरगण भुवन हेतुकरुणा २; नाचैयिरे नमामि श्रीसम्बरबीरा ॥धुँ॥ बज्रयोगिनी रतिलेमाः सरसश्रृंगारा ॥धुँ॥ वज्रवाराहि आलिंगनकण्ठ; छत्तिसंबीरंबीरेश्वर समरसगोष्ठिरे ॥धुँ॥ गोकुदहन विम्वुमल सुभक्षन्ते २; करुण लोचण लोयन्ति कान्ते ॥धुँ॥ द्वादशभुज धरीरेचारी चउवदने; नीलसंहायने गगणतुजुलीना ॥धुँ॥ ९८ ॥	राग विवाह	ताल झप

बामखर्प / श्रीबज्रयोगीनी	वामखर्प्परधारि दहनकरतिधरा पायलनोपूर मूण्डमालभूषिता ॥ नाञ्चयि एकजटि वज्रयोगिनी २ ॥धुँ॥ त्रिनिनेत्रदेवी त्रिभूवनप्रविशे ॥धुँ॥ स्थूलसूक्ष्मदेवी निरञ्जनदेवी; शुन्यपात्रदेवी शून्यस्वभावे ॥धुँ॥ कालमृत्युद्वयि पाशवन्दिया; रागद्वेषमोह करन्तिनच्छेदिता ॥धुँ॥ श्रृष्टिसंहारदेवी तारुणीदेवी; मोक्षमार्गदेवी तुम्हपयिशरणे ॥धुँ॥ ९९ ॥	राग धनाश्री	ताल जति
स्तोत्र	*एवंकारसमासेन सहजानन्द स्वरुपिनी ॥ प्रज्ञाज्ञान च देहाग्रे नमस्ते बज्रयोगिनी ॥*		

श्यामबर्णांगी

श्रीआर्यतारा

श्यामवर्णाङ्गी एकमुखधारी; त्रिनयनाद्विभुजा महोत्तलेसंस्थिता ॥ नमामि २ श्रीआयूर्यतारादेवी श्रृष्टिकर्त्तामोहिनी तुम्हपयिचरणे ॥धुँ॥ वामतरकरणे वरप्रदाता वामेकरेण सारसधरिता अलंकारवस्त्रा नानाधारी शोभिता ॥ श्रीतरमिभ्रलटा प्रंकासिता ॥ गन्धवाहासमाना भिष्मभमहरणे प्रदीपशदृशो पिंङ्गलकेशो; अकालमृत्यु जन्मजराव्याधि प्रतिभय सर्वक्लेश दुःखतारणी ॥ चतुर्मारभैरवं छेदनीभुवनं त्रयोदशव्यापिनी शुन्यस्वरुपि; श्रीबुद्धजननी अष्टोभयहरणी चतुवर्गदायनी स्वाहाकार रुपिणी ॥ श्रीवत्सनामनि विहारेसंस्थिता गणेशराजेन इयंगीताचरिता ॥धुँ॥ १०० ॥

राग मल्हार

तालषटकंकार

जयजय	वज्रयोगिनी	जयंजयंवाच्छलि सयलसुवभा; अखयदुःखसंहारने; रुनभुनयान्य नोपुराते नाचयिमाल निरवालरे; जिनप्रदयानलंते होपुराते जिनजननि वज्रयोगिनि ॥धुँ॥ जयजय हाडआभरण सुस्वभा करतिकपाल करधाणि ॥धुँ॥ जयजय लुदसमवानेपीथि; ग्रीवेरुद्र नरशिरमाला ॥धुँ॥ जयजय राख हुँ जगतसंसारे प्रणमामि अद्वय वाच्छरि ॥धुँ॥ १०१ ॥	राग भैरवी	तालएकताल
नाभीमण्डल		नाभिमण्डल माझे उर्ध भ्रमगता २ सलमानसहज सोमानगता ॥ श्रीदेवी श्रीभवसित उर्द्धगता; गगनशिखर माझे लीनता ॥ धुँ ॥ सर्वकोल मुख मातरसिता २ दहिन करति र रस पात्र धारि; वामखत्वाग ध्वन्जाधारिरे नरशिरमाला विरविता २ गावन्तिसुरतवज्र दुर्गतिभिता; जरम २ तुजुपायज्वोलिता ॥ १०२ ॥	आदि सुन्य घा	तालमाथ

चण्डमाहारोषन	ध्यान	द्विभुजंरत्नमोरिनंनाथं शिर्षापरिभुषिता ॥ अद्वयज्ञानव्यतिकान्तं सव्यखड्गाबिभुषिता ॥ सूयूर्यमण्डल समायुक्तंफुत बुद्धासु ॥ निर्मलंबामे तर्ज्जनीपाशं पञ्चमुद्राप्रशोभितं ॥ ब्यार्धचर्म्मपरिधान कण्ठंमालिनी असुकै अति मैत्यात्मकंनाथं अतसि पुष्प सनिभ निषिद्य मानदुष्टोताचर्तुमार भयानक ॥ रक्तचक्षुद्रय बीरंपिग्रलाग्रवंचित ॥ खडगसब्यगोग्रहतं नानारत्नो प्रशोभितं एतद्भव ॥ दात्मानंत श्रीचण्डमहारोषण भावयेत् ॥	राग कन्दी	तालषटकंकार
अओनिनि	चण्डमहारोशन	अओनिनि हितजानु नीलसमदेहा २ केकेर त्रिनयन भिषणवंदन ॥ ते ना न्ता २ हुँ हुँ जात अचलवीरा॥धुँ॥ निपिदित घनद्युति शोभितमगने; पाशखड्गधारी त्रिभुवनराया॥धुँ॥ हरीहरब्रम्हा ईन्द्रचवुमाला; मालविघ्नदुती शत्रुभयहरणा॥धुँ॥ विविधिरत्न मौली लंकृतदेहा; जगतविवाँछित वरफलदाता ॥धुँ॥ १०३ ॥	राग कन्दी	तालषटकंकार

स्तोत्र		*निलवर्ण महाबीरं खड्गपाश तर्जनी ॥ सर्वदुष्ट क्रोध च अचलबीर नमोस्तुते ॥*		
हुँकारसंभवं	चण्डमहारोशन	हुँकारसंभवं करपानरमित्र समस्निग्ध पिंगलकेश २ श्रीचण्डरोषण भवंभयहरणी; श्रीद्वेषवज्रिणि॥ क्षारोविभुषित अशिपाशधरिया २ त्रिभुवनवन्दित श्रीचण्डमहारोषण ॥ यँरँवँसुँकार सम्भव मध्ये;सहश्र २ रश्मी समभाविता ॥धुँ॥ विरंचितश्रीपति सकलशंचीयति २ स्तुत वन्दित चरण डाति गणेते ॥धुँ॥ गगनसंदृशवर्ण शोभिदेह; त्रिनयनधारित त्रिभुवनवीरा ॥धुँ॥ अवननिहितजानु आलिंगन जहिता; मुण्डमालासहिता व्रम्हमुण्दधरिया २ गावन्तिसुरतवज्र चण्डवीरदास्ये; गुणनिधिचरणे वन्दितधरिया ॥ धुँ ॥ १०४ ॥	राग कहु	तालाष्टकंकार

ध्यान		*ॐ झतित्या कारणे शुन्यतां भावयेत ॥ श्री कारमद्वय ज्ञान हेकार हेतु वर्जित ॥ रुंकार अपगत ब्यूहकंकार नक्वचित्थितं ॐ सर्वसत्वबरण हेतोशुक्लवर्ण द्विभुज सम्बर आत्मानं भावयेत् ॥*		
सकलजगतगुरु	सकलजगतगुरु	सकलजगतगुरु श्रीसम्वरवीरा २ अनुपमकरुण करितसूखचित्ता ॥ सम्वर २ श्रीकूरुमायितोषं ॥धुँ॥ विविधिकल्प विनासनरुढा ॥धुँ॥ देवी वाराहि तुम्ह मण्डितादेहा; भवभयहरन विशालविशोषं ॥धुँ॥ सकलविध्नं तिमतिमतिरुग्रोहां अनुपम सूखरसमग्र सूखचित्ता ॥धुँ॥ रतिपतिवर्ग निवासनरुढा भावाभावकृत हन्तिमतिरुग्रा ॥धुँ॥ १०५ ॥	राग नाटक	तालजुजमान

ध्यान		*भगवती बज्रवाराहि रक्तवर्ण एकमुखा ॥ द्विभुजा त्रिनेत्रा मुक्तकेशा नग्नखण्ड ॥ मण्डित मेखला बामभुजा आलिगण दुष्ट ॥ माराश्रृक परिपूर्ण कपाला दक्षिण तर्जयान्ति ॥ दिशासर्वादृष्ट तर्जनि कर्तिका कल्याग्नि ॥ रिवते जोग्रा सबन्ति रुधिरं प्रिया जंधा ॥ द्वय समाबेष्टा महासुख करुणात्मिका चुम्बन्ती ॥ हेरुककान्त सानेन्द्र भगवती भावयेत् ॥*		
द्विभुजाद्विमुख	जय वान्छितया घा	द्विभुज द्विमुख त्रिनिनयन; मकुटकेशा दिगम्वरा ॥ धुँ ॥ तेऽऽहेऽऽहे ऽऽनाऽऽ न्ता ३ ॥धुँ॥ वामकरोटक दहिनकरतिधरा; हाडआभरण सुशोभिता ॥धुँ॥ सूर्यमण्डलमाझे ताण्डवमुर्रतिधर नरशिरमालासूशोभिता ॥ धुँ ॥ शत्गूरुचरणे शिलेगतधरिया २ प्रणमामि श्री; वज्रवाराहिआलिंगना ॥धुँ॥ १०६ ॥	राग विभास	ताल माथ

स्त्रात्र	*नत्वांम् श्री बज्रवाराहि सर्वपाप प्रमोचनि ॥ सर्वमार बिध्वंसनि देवी बुद्धत्व फलदायनि ॥*		
ध्यान	एँवँ कार सवासिनी वँकारोत्भवस्वरुपिनी ॥ अरुणसन्विभदेह द्विभुजे एकमुख शुभं ॥ शुन्यनिरञ्जन रुपं त्रिनेत्र सुर सुरसुन्दरी कर्तिकपात्रधरीदेवी त्रैलोक्यसं चराचरि ॥ मुक्तकेशा सुशोभाङ्गी पञ्चमूद्रा बिभुषिनी ॥ पञ्चबुद्ध मकुटनी मुण्डमाला आलंकृत ॥ प्रज्ञाज्ञानप्रदं नित्यं भावाभाव बिवर्जित ॥ एकजति महादेवी भावयेत नमस्ते बज्रयोगिनी ॥		
रागमाला	*विनोदंयन्ति प्रियमेवगौरी । सकंकनाचा मरचारनेन ॥ कर्णेदधाना सूरबृक्षपृष्पं ॥ स्वरागनेयं कस्थितावलादि ॥*		

उरँगाभरण	श्रीउग्रतारा	उरँगाआभरण लोहित तरुण शोभा २ ईन्द्रनील चुर्ण पिङ्गलकेशा २ एकतारि जगतनूकंम्पा कृपागुण देवी ॥धुँ॥ दुष्टमारविनासनीदेवी २ रक्त नयन त्रिनिमुण्डमाला; खड्गकर्ति कपाल नीलोत्परा २ व्याघ्रचर्म वस्त्र प्रत्यालिधा खर्वलम्वोदरा प्रेतारुढा चरणशरण श्रीउग्रतारिणी माता २ भनयिअमोघबज्र गिता ॥धुँ॥ १०७ ॥	राग मह्ल	ताल माथ
ध्यान		*ॐ नैरात्मादेवी एकमुखं चारुद्धं त्रिनेत्रं ॥ द्विभुजंकर्तिकपात्र धारिता नीलवर्ण समारुढ ॥ पादागुष्ट स्थितादेवी नैरात्मा देवीभावयेत ॥*		
नीलहुँकार	श्रीहेज्र	नीलहुँकारन प्रज्वलितकिरणे २ उर्द्धपिङ्गलकेश श्रीहेवज्रराया ॥धुँ॥ जगत मोक्षकारी श्रीनैरात्मादेवी २ ॥धुँ॥ नीलवर्णदेवी करतिकपालधरा; जगतविवाँछित वरफल दाता ॥धुँ॥ क्रोध विरहित आलिंगनसमाधि; षोडशभुज करोटकधरीया ॥धुँ॥ भस्माविभुषित षट् मूद्राभरणे; व्याध्रचर्मपरहित नरशिरमाला ॥धुँ॥ ब्रम्हामहेश्वर नारायण ईन्द्र; चापयिचउचरण चतुमारमर्द्दने ॥धुँ॥ १०८ ॥	राग कहु	ताल षटकंकार

स्तोत्र		*नमस्तेहेबज्राय सर्वाभावाशुभाभाग्य ॥ मध्यरुपंप्रतिच्छ प्रज्ञोपायद्वयद्विजमं ॥ श्रीहेबज्र प्रणमामिम्हं ॥*		
श्रीहेवज्र	ध्यान	*एकमुखा मकुटकेशा त्रिनेत्रा द्विभुजा ॥ बामखत्वांग दहिनपात्र खत्वांगबिन्दु ॥ द्विपाद पयूर्यकनृत्य कुंकुम्मवणी पद्मबतुल ॥ द्वात्रिशदल हाहाकारे कमलासन त्रैलोक्य ॥ माता अजः बैजानचैव शरिरेद्वय मन्त्र भावयेत् ॥*		
श्रीहेवज्र	ध्यान	श्रीहेवज्र नैरात्मादेवी त्रिभुवननाथ २ पञ्चजिनव्यापित पञ्चवर्णदेहा ॥ नमामि २ श्री पुछागंचैत्य;२ हेरुक श्रीगूहेश्वरी वज्रयोगिनी शुन्यता ॥धुँ॥ पूर्व दिगस्थित भैरव नीलवर्णा देहा; दहिनपात्रधारी वामविन्दुधरा ॥धुँ॥ घस्मरि गौरीचौरी वेतालिनीदेवी; २ गावन्ति नीलवर्ण हुँकारसंजात ॥धुँ॥ १०९॥	राग मल्हार	ताल एक ताल

स्तोत्र	*निलवर्ण महाबिरा चतुचरणप्रशोभितं ॥ नैरात्मालिगीता नृत्यहेबज्र प्रणमामिम्हं ॥*			
मञ्जुश्री / मञ्जुश्री	श्रीमञ्जुनाथवर महाचीनविजया २ चन्द्रह्वास खड्गधारी नागवास दहस्थरु ॥ नमामि २ श्रीमञ्जुकुमारा जगदिश्वर जगतगुरु भुवनव्यापिता ॥धुँ॥ पुस्तकधर शुभ परम गुरुराया; श्रीधर्म धातुष्ठाने नेपालमण्डलकृत्वा ॥धुँ॥ जगतनाथ जगतगुरु निरञ्जनराया; सर्वशास्त्र बिसारद पण्डित निरञ्जना ॥धुँ॥ ११० ॥			
स्तोत्र	*ॐ मञ्जुश्री महाबिरं खड्गपुस्तकंधारिणं ॥ सर्व विद्या गुणाधार । बागीश्वर नमाम्यहं ॥*			

ज्वलितवज्रानल

मञ्जुश्री

ज्वलितवज्रानल रविशशी कूँचितद्रावयि ॐकार नादरुपं ॥ कून्दूरुसयोगे त्रिभुवनसिल्प प्रविशयि जिनशशी विन्दूरुपं २ परमानन्द मूरुतिरुपधारी क्रोधाधिपति श्रीमञ्जुवज्र ॥ ॐ आ हुँ २ हुँकार रुपँ ॥धुँ॥ कूलीश कमलसंजात सहजआनन्द पवनतरंग सरणागत २ त्रिमुखषट्भुज रत्नमकुटमौली; कृष्णशीतानन दहिनवामे ॥ इन्द्रमण्डल परिवज्रपर्यर्यङ्क; कूँ कूमारणतनू प्रज्वलित ॥ वज्रखड्गशर दक्षिणकरधारीत वामघण्ठोत्पल चापयीधारी ॥ विचित्र रत्नाभरण विभुषित; फलयि अनेकमूरतिरुप धारी २ शतगुरुचरणे कमलप्रसादे; नमामि परमधि लीलापादं ॥धुँ॥ १११ ॥

राग पञ्चम

ताल मुल्लामाथ

लिष्ठा

श्रीगणेश

ॐ नमः श्रीगणेश्वराय ॥ नमः सिंधुररारुनवर्ण तुरकुम्भं; निजवलशक्ति करीलम्वं सर्वगणा हितय वितयवं ॥धुँ॥ नौमिसदागण नायकदेवं ॥ नीलसरोज दलायनन्तेत्रं हतिमनो हरपीवरवक्तुं दानलसोमतषर्पतरवां ॥ नौमिसदागण नायकदेवं ॥ सूयूर्यसमाकृत कर्णविसारं नादल भुवुरुतालितुंतालं ॥ वलसममा वितविहेलभाव ॥ नौमिसदागण नायकदेवं ॥ पासंफंलाक्त शनिलसहतं कोमलपीवर शुज्वसुहस्तं ॥ नन्दिकराहतमुजसुरावं ॥ नौमिसदागण नायकदेव ॥ तातकनृतक भवासहाय विकमुखाकृत भुतनिकायंमुखकरा जकृततासनरावं ॥ नौमिसदागण नायकदेवं॥ नागतनो हसकन्धल हावं लम्वगुरु दभालमुद्रार संभुमनोरथसर्बतसार्व ॥ नौमिसदागण नायकदेवं॥ तामसरनिलकंराकरवर्ण षट्प पालनचंचरकर्ण एकसिता गगचंचरकर्ण ॥ नौमिसदागणनायकदेवं॥ रत्नविभुषित भुषिरतात्रं रडुकका लर्ण रारसुपुत्रघाघलना दिनदेवं ॥ नौमिसदागण नायकदेवं॥ वालसरा सुतिपंदितभानं देवविना यकतोगंविशोषं; जेचपथन्ति सदाशुभचिना तेतुभवन्तु महोदयवार्ता ॥ नौमिसदागण नायकदेवं॥ इतिश्री गणेश्वरतवस्तोत्रं समाप्तं ॥११२॥

हुँविसंभुत		हुँविसंभुत धवलवर्णाभा महाक्रोधराजा २ लोहितवर्णाभा कवीसंजात ज्वालामालिनाम महाक्रोधराजा ॥ अतिवलवेग महाक्रोधराजा मवीसंभुत महानीलवर्णा २ चकारसंजात महावलनाम अतिकृष्णवर्णा महाक्रोधराजा ॥ ॥ अपराजितनाम महाक्रोधराजा कवीसंभुत अंजनवर्णा २ जकारसंजात जतिनीलवर्णा सर्वतकनाम महाक्रोधराजा ॥ ॥ येमान्तकनाम महाक्रोधराजा अवीजसंजातज्योती नीलवर्णा २ सवीजसंभुत कोकेनवदना केलाकलिनाम महाक्रोधराजा ॥ ॥ महाकेलकलि जवीजसंजात परासरवर्णा अतिक्रोधराजा ॥धुँ॥११३॥	राग कामोद	ताल षटकंकार
त्रिदरकमल		त्रिदरकमल कुसुमसांगो मधुकर हेरुओरिणा; श्रीविरुपाक्षत्रखमुखदेवी मेदनिपोरे भुवनव्यापिता ॥ नमामि नैरात्मा त्रिभुवनव्यापित वच्छरादेवी; श्रीमृगस्थठली २ सयरसुरासुरवन्दित चरणे; अनेगऋद्धि सिद्धिवरप्रदाता ॥धुँ॥ नन्दनवर्ण इवचन्दनतरव्य अनेगकुसुमपारिजात वने; तिभ्यगंगासम वागमतितिरे अनगतीर्थ सुक्षत्रवने ॥धुँ॥ अष्टभैरव अष्टयोगिनीदेवी अनेगदेवासुरक्षेत्रपाला; अष्टमहाभय दुरितहरण अनेगविघ्नविरवारुरे ॥धुँ॥ विश्वव्यापित तारुनीदेवी अक्षयनिरञ्जन ज्योतीमय ॥ धुँ ॥ अभिमन्त्र सुखफलदायनीदेवी जरम २ तुजुपायसरणा ॥धुँ॥११४॥	राग बिभास	

चालिचरण	चाकःपुजा	चालिचरण चउचापयि चटुमारा २ आथवन प्रतिमुख त्रिनयना ॥ नाञ्चयि हेरुव नैरात्मादेवी संहितस्त ॥ अष्टयोगिणी चैयाहेरुव आनन्दे ॥धुँ॥ कृष्णवर्णतुन षोदशुभुज; व्याध्रचर्म्मधर पिंगलकेशे; चक्रिकुण्डल कण्ठिरोचक्रमेखरा विभुतिविभुषित गेलेआलंकृता ॥धुँ॥ गान्धपियरमरस सहजाआनन्दे; त्रिभुवनस चराचरण एकमुरुति ॥धुँ॥११५॥	राग नाटक	
चियंविश्वमय	विद्याधरी	चियंविश्वमयले मनोभंगेसेले भावन्तु सरवलउर्म्मीतिया; डाकिंवकुसुम संकाशे सरीराअनुहतम आरिया ॥ वामकरोतक दहिनकरवज्र नगनमकुटकेशिया; बद्यन्तनकुलोयेरे विरोयीरे वालि श्रीविद्याधरीदेवी क्षरयीया ॥धुँ॥ सुर्यमण्डलमाभ्केउदयीरेनिति चीयसंभाव्यथीतियारे ख करुणसहावे पिवयीरेनिति थनुहेमवयने उर्म्मीतिया ॥धुँ॥ अथीरथीरतहोयी रेदुन्दुरेवाज अवंधुवआलिनकालिया; सहजआनन्द महासुखक्षरी बुद्धडाकिनीदेवी एकालीया ॥धुँ॥ करुणसंहाव्य त्रिभुवन फलिया भावअभाव नहहोयिया; आदिनकष्टनरिरु पद्मजाना प्रणमामि सरवलिभनयिया ॥धुँ॥११६॥	राग मिठे	

रक्तवर्ण एकमुख	भिमेसन यागु	रक्तवर्ण एकमुख द्विभुज तृष्ण वदन भुज महा भैरव मुरति ॥धुँ॥ नमामि नमामि श्री भिसेन परमेश्वर २ वामभुज पाटन दुशासन मर्दनी २ द्रौपति त्रैलोक्ये सुरसुन्दरी २ कृष्णवर्ण दनदुहे कारी सहिता ॥धुँ॥ अर्थ लाभ पूर्णराया सुमंगला २ जगत संसार प्रसाद सिद्धि ॥धुँ॥ जगत मनोवाञ्छा श्रृष्टिफल देहिमे २ सत्‌गुरु चरणे वरप्रसाद सिद्धि ॥ धुँ॥ भावन्तु भावेन प्रसाद सिद्धि मे पद्‌ममाला गिरीस्थित बज्राचार्य भैरवयिरे २ अमृत प्रभव देव श्री राजोगिता ॥धुँ॥ ११७ ॥	राग सहज	ताल माथ
लोहितवर्णाङ्गि	भुवनेश्वरी	लोहितवर्णाङ्गि कमलासनदेवी २ नमामि श्रीजगतमाता भुवनेश्वरीदेवी ॥धुँ॥ वालार्क्क कोटितेज प्रकासिनिदेवी; एकमुख चुतुभुज केकरत्रिनयन ॥धुँ॥ दक्षिणभुजद्वयेन वरदाङ्कशधारीणी; वामभुजद्वयेनपाशाभयधारीणी॥धुँ॥ ऋद्धिसिद्धिदायणी अष्टौमहाभयतारिणी; गावन्तिवज्राचार्य गणेशराजगीता ॥धुँ॥११८॥	राग कनन्दी	तालएकताल

ब्रम्हायणी	बामखटपरथ्रै	एकमुख त्रिनयन परमेष्टिदेवी काञ्चलनशोभित हंसवाहिनी ॥ धुँ ॥ प्रणमामी देवी श्रीब्रम्हायणी ॥ बामादहिनकरधारी कपालविन्दु ॥ अपरकपालधारी अक्षसुत्रकमदरु सर्वतसुखफलदायणीदेवी ॥ धुँ ॥ जगतदुःखदर्पेनासनी जनस्मरणे अतिसुखफलदायणीदेवी ॥ धुँ ॥११९॥	राग बराडी	ताल माथ
महेश्वरी	एकवर्णथ्रै	इश्वरीदेवी बृषवाहनी धवरवदना त्रिनिनयना ॥ धु ॥ नमामि २ श्रीजगतजननी सर्वव्यापिनि चन्द्रशेषरी मुलभुजद्वय विन्दुपात्रधरा ॥ धु ॥ इतलेदहिन भुज अक्षसुत्रवरदे : बामइतले कमण्डरुत्रिसुरा ॥ जगतजननी जगदिश्वरी भुक्तिमुक्ति फलदायनीदेवी ॥ धु ॥१२०॥	राग नाटक	ताल दुजमान

कौमारी		अरुनवदन रौद्री वालकौमारीदेवी : रक्ता त्रिनयन मयुरासनी ॥ प्रणमामीदेवी विश्वव्यापिनी ॥ चतुरभुज विन्दु सिद्धिपात्रधारी अपरभुजशक्तिकर्तिधारी ॥ धुँ ॥ रक्तबस्त्र आभरणं सुशोभिता२ त्रिनिभुवन व्यापिता ॥ सर्वदुःख दुरिता विनासिता २ येनभक्तिसत्व अनुरक्ता पुरिता ॥१२१॥	राग पद्मजली	ताल माथ
वैष्णवीदेवी	षट्योगीनिश्चे	कस्तुरीचन्दन सिंन्धुलरेयित : कोयगठि कुसुमशिलसिंधृता; धुपकाय पद्मश्याम नीलबस्त्र विविधि आभरणभुषिता ॥ धुँ ॥ पुजित अलिवलिओदनमास मद्यरस संयुक्ता करवबृक्ष निवासित बैष्णवीदेवी शरणे ॥ धुँ ॥ गर्हमुदि विहि कवल्वा वदक्षणादि २ अम्वरफलजाति फलपुरयक्वान ॥धुँ॥ चतुर्थीद्वादशि सोमसुत बुद्धवारदिनपुजिताः सर्वमारविघ्न विध्वंसनीदेवी सर्वसुखवरद नमामी ॥धु॥१२२॥	राग गन्धारभैरवी	ताल जति

बाराहि	षट्योगीनिध्यि	बंदनधोररुपि वाराहिदेवी २ त्रिनयन रक्तांगीः पिङ्गलकेशा प्रथम भुज द्वयनविन्दु पात्रधारी ॥ अपरभुजद्वय खड्गफेटकधारी ॥ नमामी २ देवी महिसाशनी सकरसिद्धिप्रदायणी विश्वव्यापिनी विश्वजननीः बीरबीरेश्वरी घोररुपीनी मृत्युंजलारुजकदेवी ॥ धुँ ॥ मुण्डमाला भरणा वन्हि स्मदेहा; प्रजोलित शिरशिरत्नमुकुटधारी गीनांकुशधारी दन्तकलाल लालजिह्वा असुरसंभारा ॥ धुँ ॥ भवभय दुःखविनाशितकारी येनसत्व स्मरण अभिराषप्रसिद्धि ॥ भुक्तिमुक्ति फलदायणीदेवी जरम जरम श्रीबज्रवाराही शरणा ॥ १२३॥	राग कर्णाटंक	ताल षट्कंकार
इन्द्रायणी	नीलवर्णध्यि	पंकार वीजसंभव पश्चिम इन्द्रायणी कुकुम प्रीयवर्णा दन्तिमारुधा ॥ एकरक्ता त्रिनयना विचित्ररुपिः नानारत्न भुषित विराजिता ॥ धुँ ॥ जरम जरम श्रीसुरेश्वरी इन्द्रायणी शरनागत सर्वदेवा ॥ धुँ ॥ मुलभुज विन्दुपात्रधारी घण्ठकुलिस अपरभुज ॥ धुँ ॥ सकलशुरगन पुजितदेवी दुरितहरण तुम्हदेवी शरण ॥ १२४॥	राग ललित	ताल दुर्जमान

मेघवैश्वानर	चामुण्डादेवी	मेघवैश्वानर निसितवदना उर्द्धपिंगलकेशा श्रीकालिकादेवी ।।धुँ।। जगतमोक्षकारी श्रीचामुण्डादेवी ।।धुँ।। सूर्यसमदेहा विन्दुकपाधरा ।।धुँ।। अपरभुजद्वयन खड्गफेतकधरा ।।धुँ।। कालचन्द्र भैरव आलिंगनसोधे ।।धुँ।। महारागविशुद्धि महामायाकारी ।।धुँ।। रत्नमुकुटशिरसि मुण्डमालभरणे; नरचर्म व्यस्थित कंकालरुपिणी ।।धुँ।। प्रेतासुर रिपुगणसर्व २ चापयिचरणे प्रत्यालीढपदं ।।धुँ।। १२५ ।।	राग कहु	निल हुँकारया घा
पुर्वदिगास्थित	पिथयागु	पूर्वदिगस्थित ब्रम्हायनीदेवी कनकवर्णांगि हंसासनी ।। धु ।। उदिच्यादिगिस्थित रुद्रायनीदेवीः चन्द्रसमदेहा बृषवाहनी ।। धुँ ।। अष्ट समशाने वीरंवीरेश्वर नाचयी सहजान्दे ।। धुँ ।। प्रतिच्यादिगिस्थितः इन्द्रायनीदेवी कुंकुमवर्णांगी सहजवाहनी ।। धुँ ।। यम्पादिस्थित वाराहिदेवी वन्हि समदेहामहिसासनी अग्नादिस्थित कौमारीदेवी अरुनस सनिभा मयुरासनी ।। धुँ ।। नै ऋतपृथ्वी स्थित विष्णुवीदेवी हरीतवर्णांगी गरुडासनी ।। धुँ ।। वायुव्यपृथ्वीस्थित कालिकादेवी सूर्यसमदेहा प्रेतासनी ।। धुँ ।। इशानपृथ्वीस्थित महालक्ष्मीदेवी धुमवर्णांगीं सिंहासनी ।। धु ।। सत्गुरु चरणे शिरेगतधरिया गावन्ति सुरतवज्र बज्राचार्यगीता ।। धु ।।१२६।।	राग भैरवी	ताल षट्कंकार

महालक्ष्मी

मध्येमेश्वरी

इशानेमहालक्ष्मि धुमबर्णाभा सिंहमारुध दिव्यरुपीः २ प्रथम भुज द्वय विन्दुपात्रधारयीः अपर भुजद्वय खड्गफेटका ।। हुँ हुँ नमामी चण्डि विश्वरुपीमाता पद्मचन्द्र भैरव सहजदेवी ।।धुँ।। पुर्वउत्तरपश्चिमदक्षिण चर्तुभुवनेः सर्वविघ्नमार ध्वंसनीया ।। ब्रम्हायनी पीतारुद्रायश्वेताः कुकुम इन्द्रायनीः रक्ताङ्गी वाराहि ।। अग्ने कौमारीः नैऋत्य वैष्णुवी वायुव्य कालिका इशाने चन्द्रिका २ दहिन गणपति वामेकुमार सिघ्रिनी व्याघ्रिनी सगणदेवी ।। धुँ ।। अष्टजोगिनी भैरव क्षेत्रपाल सहिंता सर्वलंकारभुषिता शोभाः २ भुगुति मुगुति फलदायनी प्रणमामी देवी श्रीचक्रेश्वरी ।। धु ।।१२७।।

राग भैरवी

ताल झप

अगनित	क्वयनादेव यागु	अगनित करुखविदारनदेहाः विंघ्नान्तक महाक्रोधरायाः सुरनरनाग यक्षगन्धर्व वन्दिताः देव विगणेश्वर भुवनव्यापिता ॥धुँ॥ नमामि २ श्रीगणपति चरणे ऋद्धिसिद्धि बरप्रदायनीः दुरित हरने २ सुंभमगरदायनी विविधि धातुनिधि पुरिता ॥ धुँ ॥ गजमुख लंवोकर नाभल लम्बोदल नित्याधिपा २तांदवपद अतिरावनदेहाः रक्तवर्णमहोज्वोला ॥ धुँ ॥ रत्नाभरना विभुषितदेहाः व्याध्र चर्म्म मनोहरनाथा २कच्छपालगिरि बरभुवनिवासत : सर्वसत्वसिद्धिसंप्राप्ता ॥ धुँ ॥ जरम जरम मोरु गणपतिचरणे अभिमन्त्र सुखफल दायनी ॥ धुँ ॥ सतगुरु चरणे शिरेगतधरिया गावन्ति जिनपासमतेगीता ॥ तेनान्ता तेनान्ता तेनान्ता ॥ धुँ ॥ १२८ ॥	राग मधुमत	ताल झप
विकचक्र	छिन्दमस्तक	विकचक्रमलोपरि दिनकरमण्डल सिन्धुलवर्ण धर्मोदया जोगिनी ॥धुँ॥ श्रीदेवीपितंबर्ण एकमुख २ तव ऋद्धिफलन विभवदायनि जोगिनी ॥ धुँ ॥ दहिनवाम पादकुचित्तवधा २ करधारी कर्तिनच्छेदनि क्लेशेयोगिनी ॥ धुँ ॥ वामकरस्थित स्वशिरे मुरुति २ ग्रीव्य भिरिभिरि रुधिर वयिरे जोगीनी ॥ धुँ ॥ भनयि रयन माधवजगीत कृत २ प्रणमामि श्रीदेवीछिन्नमस्तक जोगिनी ॥ धुँ ॥१२९॥	मोमदुदेओयागु	राग षटकंकार

नमामिहारति	शितलादेवी	नमामि २ श्रीहारति महायक्षणीदेवी २ पञ्चसत पुत्रपरिलायदेह देवी ॥ धु ॥ नमामि २ पदुनि मामकिदेवी जगतसंसार परिपारिता २ः जनम ऋद्धि मोक्ष मुक्ति प्रसादे तेनाहुँ ॥धुँ॥ नमामि २ श्रीसुक्येधनदेवी बैद्य विजयाषभिताः २ द्वादश वर्ष पुत्री विचारिता ॥ धु ॥ नमामि २ श्रीमञ्जुबज्रनगीत चरिताः प्रणमामि श्रीपदुनिदेवी ऋद्धिसिद्धि देहिमे ॥ नमामि२ चुडानाम भिक्षुनीदेवी २ धर्मधातु परिपारिता नृत्ययन्ति ॥ १३०॥	राग मल्हज	ताल झप
नमामिदेवी	मोपतादेवी	नमामि २ देवी त्रिभुवननाथ २ रक्तवर्ण पीतवर्ण मुण्डमाल भुषिता ॥ नमामि २ श्रीजोगीनी जगतजननी ॥ मकुटकेशे हाडआभरण विभुषिता ॥ वारखउर्कास्या हरन गमनाः२ देओदेवी गमने आकाश स गमने ॥ अष्टमहा भय भवभयहरना जरमजरम मोक्षवरप्रदाता । शतुगुरु चरणे सिलेगत धरिया भनयी तुम्ह चरने सरनागता ॥१३१॥	राग शृङ्गारनाटक	ताल दुर्जमान

श्रीबंगलामुखी		पीतवर्णएकमुख द्वयभुजधारीता २ मणिरत्नमुक्तादि सिंहासनसस्थिता ॥ नृत्यन्तिवर्णप्रभा वंगलाश्रीदेवी ॥धुँ॥ त्रिणिलोचनिदेवी पिंङ्गलकेशीनी ॥धुँ॥ वामकरेण शत्रुजिव्हाधारीता; दक्षिणकरेणगदाअत्रधारिता॥धुँ॥दैत्यारिधोररिपुचपलंच्छेन्दिता; रागदिडाकिनी दुष्टभयहारिणी ॥धुँ॥ अनेकगौरमाल्य वस्त्रादिभुषिता; सुन्दरीदेहमूर्त्ति नवरुपधारिता ॥धुँ॥ प्रतिमूखशोभितन त्रिभुवनव्यापिता; अष्टोमहासूख ऋद्धिसिद्धिप्रदाता ॥धुँ॥ महाविहारेछ श्रीवत्सनाम्नि; वाछितगणेशेन चरितगीता ॥धुँ॥१३२॥	राग महुजु	तालझप
माया जाल		मायाजल विवस दृस शरिरा मोहमान दया छादिरे माया मोह ॥ धुँ ॥ ए संसार असारा राग द्वेष मोह छादिरे निरआसा ॥ अनमिख नय दृढकरुचिय २ उन्ममरीर चिक; दुष्टरे पूण्य दु ॥ सहज स्वाभाव मय उद्नागत धरिया २ ऐ स्वपरम वासरुद्ध ॥ अवध्रुव उदय चन्द्र पाय प्रशादा २ गावन्ति निदूःखया भवचक्र तारिता ॥ १३३ ॥	राग देसाख रामकीरि	ताल झप

तारादेवी यागु		हरित वर्ण ललितासन एकवक्त ।। द्वयदृष्टि किरीत रत्न मन्दिता ।। धुँ ।। नमामी २ श्री आर्य तारा देवी अकाल मृत्यु नासनी त्रिभुवन व्यापिता ।। धुँ ।। दहिन प्रव्यस्ते अभय प्रदाता २ वामभुजय निलोत्पल धारी ।।धुँ ।। पञ्च चिर वस्त्र सुचेलक धारिता २ जिन ज्ञान दायिनी मोक्ष प्रदाता ।।धुँ।। आर्यतारा चरणे जन्म२ शरण २ गावन्ति कुलिस रत्न गीत चरिता ।। धुवा ।। १३४ ।।	राग नाटक	ताल दुर्जमान
द्वंवी सरोवर		द्वंवी सरोवर विरासयि केसा २ उर्थ भरा रो मण्डल राया जुगा ।। यजुगथ निवासीयारे ।। धुँ ।। अमिया अमृया झरत विरा सयिकेसा २ सहज सुन्दरी हुरेया जिनहुरे प्रयिसयी नान्चयी ।। धुँ ।। येचउ जोगीनी एकनेमेरा २ वज्रवाराही आलिंगन कोलयि नान्चयि ।। धुँ ।। उर्थहु भरारो करुण कवारी २ जय आलिंगन निलवर्ण वोजयि नान्चयी ।। धुँ ।। उर्थभरारो श्रीसम्वर वज्रबाराही आलिंगन निवासियारे ।। धुँ ।। ।। १३५ ।।	राग गोदाहरी	ताल माथ

पवन बज्र निल धरणी मण्डल २ तदुपरी कनकाचन मध्येवस्तित ॥ धुँ ॥ नौमि श्री चक्रसम्वर तव पद कमल ॥ श्री बज्रवाराही आलिंगन ॥ धुँ ॥ आलिकाली आरिढ चरण ॥ चतुरमार मर्दन भव भय हरण ॥ धुँ ॥ वेदवदन दहन नयन २ घनसरसपूलित सम्वर बदन ॥ धुँ ॥ विश्व भी दूल सार्धनी शेष ॥ मन्दित से खल कुदुर करण ॥ धुँ ॥ अनेक पद्विप उधयंच स्वख २ सत्रकोटी घण्ठा सय दायक रित्रा ॥ धुँ ॥ वाजिरे दमरु धारित खत्वांगे २ त्रिशुल कूंथा पास ब्रम्हा ॥ धुँ ॥ सत्रिधिरं से दमरजासन भद्र २ पियूष पूरित्र करोटक शोभिता ॥ धुँ ॥ करति सराजा सनसिर धरित्रा २ सघनरसिर मारलविता ॥ धुँ ॥ पंचस वस्यकावित्र ज्वलिता २ षतूमुद्राभूषित भष्म विरापिता ॥धुँ॥ मिगान्द्र नरचर्म कष्टावेनि वेतित्र २ हाड आभरन नुपुलधारिता ॥ धुँ ॥ सतूगुरु चरण मस्तक धारिता २ भनन्ती सुधानन्द सम्वर गिता ॥ १३६ ॥

मध्येमेरु महामणी सुवर्ण सहिता पुर्व विदेह दक्ष जम्बुद्विपे ।। पश्चिम अपर गोडायनी उत्तर कुरुभुवने; पञ्चबुद्धव्याप्तमान ।। नमः पञ्चबुद्ध यात ।। विश्वे सर्वहित सुखयाना च्वम्ह पंच मुर्ति ।। अष्ट द्विपे न्हयाना च्वंगु अग्नि समान ।। हरणयाना च्वम्ह घनघोर भय उत्पति जुगु प्यंगु थासे २ ।। याँ उपद्विप राँउपद्विपं चाहुला च्वन ।। वथ्यें तुं लाँउपद्विप प्यंगु भुवने वाँ उपद्विप श्री खण्डपरशु ।। बोधिज्ञान या बलंवोगु नरनारी निम्ह च्वना न्हयगु आदरं चुम्वन याना ।। पुर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर चक्रमणि तुंथि खानी मुं थें बेद न्यंका ।। गुरु चरणे कायवाक चित्त भक्तिभाव याना ।। मने स्वांह्वयेका उत्तमफलं बुद्धपुजा ।। नमस्कार भाव सर्वबिधान पुरिता ।। पृथ्वीलखं खानीसकल चढेयाय् ।। १ ।।

आदिसुर		शुन्य स्वभाव न्हापा संसार बायु अग्नि लः या भुमि ॥ संभव मेरु शिखर दथुई दक्को मण्डल अनदु ॥ डाक डाकिनी दक्को आकाशे व्याप्त पुजा याम्ह बज्राचार्य लुमंकल मने ॥धुँ॥ बोधिज्ञान स्वभाव अनुत्तर सिद्धि बिम्ह प्यंगु समाधि योगे मन्त्रं बिन्यास ॥ थः थः देव देवी पिं पुजा जिं अप्पा ल्वहं चाया धातु रुप अद्वय रस बुद्धज्ञान ॥ विश्वबज्र दथ्वी भुंकार मन्त्र सिंहासन स्वभाव ॥ संसार पद्म दथ्वी बुद्धया रुप दक्को देव पिसं चाहुला च्वन ॥ बुद्धचरणे शिरेचढेयाना ॥ गीत च्यूम्हतथागतबज्र ॥ धुँ ॥ २ ॥	राग पञ्चली	तालमुख
अनुकर		अनुतर तथताज्ञान वंकार भाव रत्नरुप चिन्तना बिचित्र कलश ॥ ॐ आ हुँ कार बज्र अमृत लखं न्हयेक संशोधन याये मन्त्र ॥ ज्ञान अमृत खानी शीत अमृत रस बोधिज्ञान फल बीगु दक्को बुद्ध व्याप्तगु पञ्चबुद्ध स्वरुप सहज कलश ॥ जगत पापशोधन शुन्य करुणा ज्ञान संसार अनित्य रक्षक रुप बुद्धज्ञानया रस खानी सुगन्ध लखं युक्त शंख देछाया पञ्चामृत त्वने ॥ हुँकार मन्त्र व्वना सुगन्ध स्वां छाये बज्र द्योने तये बिपाक कलशे ॥ घट स्वरुप अभ्येन्तरे बिन्दु रुपभाव आकषर्ण तारादेवी स्वरुप जलरुप ॥ हतासनं शोधन देवतादी चक्रे ज्ञान सत्व मानेयाय् हृदय मन्त्र किरण ॥ पाद्य अर्घ आचमन दान पुण्य शरण समय सत्व प्रयोग बिमर्द कलश ॥ महारागदि मदु हान बोधि चित्त रुप समय सत्व ज्ञान चक्र मिले जुम्ह ॥ ॥ ३ ॥	राग ललित	तालमुख

भानुमण्डल		सूर्यमण्डल दथ्वी च्याना च्वन हुँकार आलीकाली निम्ह न्हुया च्वना हेरुक ॥ बन्दना २ श्री हेरुक स्वंगु लोकनाथ ॥ ॥ धुँ ॥ बज्रवाराहि आलिंगन हेरुक ॥धुँ॥ वचुवर्ण प्यपा ख्वाल स्वंग मिखा २ विश्वबज्र अर्द्ध चन्द्र जटा संयुक्त, ॥ धुँ ॥ डाकिनी रामा खण्डरोहा रुपीनी २ प्यम्ह देवी नृत्ययाना च्वंगु थासे बिलास ॥धुँ॥ तिसा खुगु मुद्रा स्वीखुम्ह सम्वर २ गीत च्युम्ह अनुपम बज्र हेरुकदास ॥धुँ॥ ४ ॥	राग श्रृंगारनाटक	तालदुजमान
मण्डलसमयाचक्र		मण्डल पुजाया चक्र मण्डले सम्पुर्ण ॥ भिंनिका ल्हा प्यपा ख्वाल जुया ॥ सिकेमाल करुणा श्री सम्वर योगीनी श्री यंबच्छलादेवी धाम्ह तारुणीया ॥धुँ॥ डाकिनी रामा खण्डरोहा रुपिनी प्यंगु दिशाय् प्यम्हदेवी थुपिं सिके ॥ कायवाक चित्त स्वंगु भुवने दानपतिया शुभ तरे जुयमा; योग योगीनी गणपिं नापं रसभाव च्यागु श्मशाने श्री हेरुक बिज्यात ॥धुँ॥ ५॥	राग बिभास	तालमाथ

नमोहुँकार		नमोहुँकार स्वरुप शरीर; भक्तपिं सत्वउद्धार याईम्ह ॥ आनन्द परम आनन्द ॥धुँ॥ निर्मल तुयुगु शरीर धारित; स्वभाव शुद्धम्ह सर्वज्ञ जुम्ह ॥ द्वन्द्व आलिंगन योग धारिता; बज्रघण्ठ ज्वनां बिज्याम्ह ॥धुँ॥ मायामोहादि संसारं मथ्युम्ह; निश्चय बज्रसत्व परमेश्वर ॥धुँ॥ ६ ॥	राग गन्धारभैरवी	तालदुर्जमान
नीलबर्ण		वचुवर्ण बारुणीदेवी चक्रिकुण्डल कंठिका; रोचक्र मेखल निगु तिसां तिया ॥ नमस्कार नमस्कार देवी श्री मामकी ॥धुँ॥ न्हुगु जोवन जूम्ह स्वंग मिखा बांलागु; शुद्ध मनुया भक्तिनं पुजा २ थःथःगु मन्त्रबीजं उत्पन्न देवी मामकी ॥ न्यागु थले च्वंगु अमृत देव देवी सुरनरनं बन्दना ॥धुँ॥ ७ ॥	राग नाटक	तालषटकंकार

श्रीदक्षिणकाली		वचुगु छपाख्वाल कुलिचिंगु सँफुक; खुकाल्हाते खुगु ज्वोसा ज्वना विज्याम्ह ॥ नमामि २ श्री दक्षिणकाली चरणे ॥धुँ॥ श्री चामुन्दादेवी दक्षिणेस विज्याम्ह; भुतप्रेत फुकमुना थःगु आसनयाना ॥धुँ॥ असुरनाशयाना नरशिरकोखाया; हाडया तिसा तिया बिन्दुपात्रस ज्वना ॥धुँ॥ भैरव जवयस मातृकागण खवस; खत्वाङ्ग खड्गज्वना दमरुथाना ॥धुँ॥ जवगुल्हाते त्रिशुल खःगुल्हाते अशुर; गुलिच्यागु मिखास्वया त्राहिरुपक्यना ॥धुँ॥ ८ ॥	रागसहज	तालझप
श्रीमहामञ्जुश्री		श्री महामञ्जुश्री महाचीन विजया; नेपाल मण्डल माभ्केपद्मगिरि निवासिता ॥धुँ॥ नमामी २ श्री महामन्जुघोष कुम्कुमबर्ण एकास्य चतुर्भुजा ॥ दहिनभुजय खड्गसरधारी; बाम भुजय पुस्तक धनुधारी ॥ ॥धुँ॥ अक्षत मण्डल श्री मञ्जुकुमार सुवर्ण पादुका बन्दित पुजा ॥धुँ॥ दहिन गणपति स्वेतबर्ण; बाम श्री महाकाल नीलवर्ण ॥धुँ॥ सत्गुरु प्रसादे ऋद्धि सिद्धिदाता; भनयि श्री स्वेतबज्रगीत चरित ॥धुँ॥ ९ ॥	राग नाटक	तालत्रिताल

श्रीमहाकाल		ॐ आ हुँ स्वभाव जुयाव विज्याम्ह; वचुगुशरीर छ्वोगु मिखा तेज ॥ विज्याकम्ह महाकाल हुँकार मुरुति प्रभुयात सदानं नमस्कारयाये; ॥ धुँ ॥ नानारत्नहार नौपुलजस ॥ धुँयागु छ्येगु हिना किसियागु छेंगुभुना; गुली च्यागु मिखा भयंकर वा न्हेया; प्यम्हमार पिन्त त्राहीयाना बिज्याम्ह; खड्ग कर्ति जवस त्रिशुलपात्र खवस; प्रेतासनयाना प्रत्यालिढ कया; दुष्टगण चियतः ल्हातुती गलस; घोररुप नाग तिया बिज्याम्ह; बुद्धयागु द्वारसः रक्षक जुवम्ह; महाकाल नामः छलपोल विर; दानपति सकल सुखऐश्वर्य जुयमा; अष्टसिद्धि दयमा मोक्षफल लायमा ॥धुँ॥ बिज्याम्ह महाकाल हुँकार मुरुति प्रभु यात सदानं नमस्कार याये ॥ धुँ ॥ ॥ १० ॥	रागमल्हार	तालषटकंकार
श्रीचण्डमहारोषन		अतिघोर रुपजुया आकाशबर्ण क्यना; खगुल्हाती पाश ज्वना मार पिन्त चिना ॥ ते ना हुँ नृत्यकया त्राहि रुप क्यना; हुँकार विज्याना व अचल रुप क्यना ॥धुँ॥ जगुल्हाती खड्ग ज्वना जगुवाली चुया; प्यम्हमार पिन्त स्वया खगु पुलिंचुया ॥धुँ॥ गुलिच्यागु मिखा कना शत्रु भय फुका; पापी लोक पिन्त स्वया ख्वास्येकुंकाव वान्हेया ॥धुँ॥ धुंया छेंगुतिहिनाव नरशिरकोखया दशवल पिकया व बुद्ध सिद्धि बिया ॥धुँ॥ ११ ॥	राग कन्दार	तालषटकंकार

हे देवी जननी दुःख दक्व हारिणी; अष्ट महाभय तारिणी जगतसंमोहिनी ॥धुँ॥ तारादेवी माँ यात नमस्कार जिनं; छलपोलया चरण नित्य जि शरण ॥ वाउंसे च्वंगु रुप छपा ख्वाल जुया; स्वर्ग मर्त्य पाताले स्वंग मिखां स्वया ॥ कुलि चिंगु सँ फुक्क क्वकयाव च्वम्ह; क्येलें हनं मिखानं सकल सोइम्ह ॥ जगतयामाता आयूर्यतारा धायेका; पद्मासन याना ललितासन जुया ॥ संसारया दुःख प्राणि पिंगु दक्व फुका व विज्याम्ह बोधिज्ञान वीम्ह ॥ अहंकार यायीपिं मार गणपिन्त; ज्ञानयागु अस्त्रं शान्ति याना विज्याम्ह ॥ षत् गति प्राणीपिन्त चाहुला च्वंपिं; पापीगण धापिं फुक्कयात स्वयीम्ह ॥ करुणा व शीलया बसः तिसां तिया; दुःखिपिं लुमंका सुखवर विया ॥ हे प्रभुमाता भय दक्व फुका सुख शान्तिदाता देवी आर्यतारा ॥धुँ॥ तारादेवी मांयात नमस्कार जिनं; छलपोलया चरण नित्य जि शरण ॥ १२ ॥

वामखत्पर	श्री बज्रयोगिनी	सूर्ययागु तुल्य तेज अति न्ह्यांगुवर्ण; पायल जँस हिना नोपुर चिना स्वंग मिखां स्वंगु लोके सुदृष्टि स्वयिम्ह; प्राणीपिन्त तरेयाना निरञ्जनदेहा ॥ धुँ ॥ जति एक तालकया नृत्ययाना बिज्याम्ह मुण्डमाला कोखया व बज्रदेवी जुया ॥धुँ॥ जन्म जरा व्याधी मृत्यु पाशनं चिना; रागादि द्वेष मोह दुःख दक्व फुकीम्ह ॥धुँ॥ श्रृष्टि संहारकर्ता तारणीमाता; प्रज्ञा ज्ञानबरदाता मोहिनीरुपा ॥धुँ॥ शुन्य रुप प्रभु जुया मन्त्र दक्व शरीर; मोक्षमार्ग फल बीम्ह छलपोलया शरण ॥धुँ॥ ऋद्धि सिद्धि फल बीम्ह प्रभु माँया चरण; दक्व प्राणीपिन्त स्वया अमृत त्वंकीम्ह ॥धुँ॥ योगीनी भक्तजुया माँयात लुमंका ॥ धुँ ॥ १३ ॥	राग बलाढी	तालमाथ
पञ्चभुतात्मक	श्रीपञ्चबुद्ध	पञ्चभुतात्मक ज्योति रुप चैत्य ॥ नमामि नमामि श्री पञ्चबुद्ध चरणे ॥धुँ॥ सहश्रदल पद्मस्थित श्री बैरोचन मध्य; स्वेतबर्ण सिंहासन बोध्यांगी मुद्राधर ॥ पूर्व दिगस्थित श्री अक्ष्योभ्य नीलवर्ण देव; भुस्पर्श मुद्राधर गजासन देव ॥ दक्षिण दिगस्थित श्री रत्नसंभव; पितवर्ण तुरगासन बरद मुद्राधर ॥ पश्चिम दिगस्थित श्री अमिताभ; रक्तवर्ण मयुरासन ध्यान मुद्राधर ॥ उत्तर दिगस्थित श्री अमोघसिद्धि; श्यामवर्ण गरुदासन अभयमुद्रा धर ॥ सत्‌गुरु चरणे शिरेगत धरिया ॥धुँ॥ १४॥	रागसहज	तालषटकंकार

षटयोगिनी		खुम्ह योगिनी देवी स्वंगु भुवने व्यापक २ विघ्नमार दुष्टगणः शत्रु भय हरणी ॥ नमस्कार याना देवी श्री बज्रवाराहि ॥धुँ॥ पूर्व दिगेच्वम्ह न्हयांगुवर्ण जूम्ह ॥ ईशाने यामिनीदेवी वचुगु वर्णम्ह ॥ बायुव्ये मोहिनीदेवी तुयुगु वर्णम्ह ॥ पश्चिमे संत्रासिनीदेवी म्हासुगु वर्णम्ह ॥ नैॠत्ये संचारिनीदेवी वांगु बर्णम्ह ॥ दक्षिणे चण्डिकादेवी धुम्रवर्णम्ह ॥ प्यका ल्हा छपा ख्वाल खुगु मुद्रांतिया ॥ थः थःगु बीजमन्त्र बासयात दिगम्वर ॥धुँ॥ १५ ॥	राग कन्हार	तालएकताल
श्रीबज्रयोगीनी		श्री बज्रयोगीनी हेरुक शक्ति प्रज्ञादेवी धायेका प्राणीपिन्त स्वया ॥ बज्रदेवी जुया अमृत ज्वना प्राणीपिन्त स्वया अमृत विया ॥धुँ॥ खःगुल्हातं खत्पर ब्रम्हायागु कपाल; महारसतया नित्यथम्हं तोना ॥ जवगु तुती स्येकुंका खगु तुति तप्यंका जवं कर्ति ज्वना बेताल न्हुया ॥ अजःथ्यैं हाकुगु अतिनं बाँलागु स्वंग मिखा कना स्वंगुलोके स्वया ॥ स्वहः लूगु पद्मस दथ्वी थः बिज्याना; खुम्ह देवी चाहुयेका खुगः थापिं क्यना ॥ डाकीनी रामा खण्डरोहा रुपिणी; प्यंगु द्वारे तया नव रसेम्हिता ॥धुँ॥ नरशिरंकोखया भयंकरं वान्हेया ; पापि दुष्ट पिन्त त्राहि रुप क्यना ॥ बिभुतिनं बुला सँ फुक्क तोता; हाड तिसांतिया मन्त्र सिद्धि बिया ॥ ॠद्धि सिद्धि दक्व गुहे महा अमृत; अनुत्तर ज्ञान वरदान बिम्ह ॥ थुगु गीत च्युम्ह पण्डित धाम्ह योगीनीया भक्त बैद्य बज्राचार्य ॥धुँ॥ १६ ॥	रागसहज	तालषटकंकार

श्रीहारतीमाता		हारतीमाता अतिनं तुयुम्ह २ जवं खवं काय् म्हयापिं न्यासः मचात घेपुना ॥ नमस्कार याना हारतीमाता ॥धुँ॥ पद्मासनयाना ललितासन जुया; स्वंग मिखांस्वया स्वर्ग मर्त्ये पाताले ॥ धुँ ॥ देव दैत्य मनुते दक्व बालक पिन्त; थव पुता भालपायाना व बिज्याम्ह ॥धुँ॥ नेपालमण्डले श्री स्वयंम्भुस्थाने; रक्षकजुया प्राणीपिन्त स्वया ॥धुँ॥ अनेक शंकष्ट बालरोग फुकं; दोष दक्व मदयेका भय सर्वफुका ॥धुँ॥ बलि भोजनयाना सन्तोष जुया; भावभक्ति स्वया त्राहि रुपक्यना ॥धुँ॥ सकलयामाता हारतीदेवी; दुःख स्वयेमफुम्ह सुखवरबीम्ह ॥धुँ॥१७॥	राग कहु	तालषटकंकार
श्रीकौमारी		अति हयांगुरुप क्यना व बिज्याम्ह श्रीकौमारी; स्वंगु लोके स्वंग मिखां स्वया व बिज्याम्ह ॥ भुक्ति मुक्ति बिया बिज्याम्ह माता ॥धुँ॥ सत्ययुगे बज्रदेवी जुया बिज्याम्ह; त्रेतायुगे बसुन्धारा जुया काम्ह ॥ द्वापरयुगे महालक्ष्मी जुया बिज्याम्ह; कलियुगे श्रीकौमारी जुया काम्ह ॥ प्यंगु युगे प्यंगु रुप क्यना बिज्याम्ह; कर्तिकपाल ज्वना मयूर गया ॥ अमृत प्रसाद त्वंका बिज्याम्ह; प्रातः काले बालरुप मध्यान्हे तारुणी ॥ सन्ध्याईले बृद्धिरुप जुया बिज्याम्ह; ऋद्धि सिद्धि बर बिया सुन्दरी रुप क्यना ॥धुँ॥१८ ॥	राग ठ्वेनी	तालमाथ

श्रीमञ्जुश्री		श्री मञ्जुनाथ गुरु महाचीनं बिज्याम्ह २ चण्डहास खड्ग ज्वना नागबास दहने ॥ नमस्कार २ याना मञ्जुश्री गुरुयात ॥ धुँ ॥ जगतसंनाथ जुया सकभनं व्यापक ॥धुँ॥ प्यंगु दिशाय् लखं छोना बुद्धयान ऋद्धिनं; श्री स्वयम्भु स्थाने नेपालमण्डल दयेकुम्ह ॥धुँ॥ प्रज्ञा पुस्तक ज्वना परमगुरु जुया; बुद्धशास्त्र ज्ञानकया पण्डितबर जुया ॥धुँ॥ धर्मधातुमण्डलया दथ्वी मञ्जुबज्रधायेका; बिज्याम्ह बज्रदेह बज्रधरपुत्र ॥धुँ॥ आर्यनामसंगीति महामञ्जुश्री धायेका; प्यंगुयानया गुरु जुया निरञ्जन रुप कया ॥धुँ॥ थुगु गीत च्युम्ह भक्त शरणजिवया; महागुरुया चरण बन्दना जिगु ॥ धुँ ॥ २१	राग नाटक	तालदुर्जमान
अष्टदर	श्रीशाक्यमुनी	जगतो हिताय प्राणीपिं सुखाय; लोकपिंगु उपरे चाहुला जुयीम्ह ॥ बिश्वव्यापि बुद्ध तथागतयात; नमस्कारयाना नित्य जि शरण ॥धुँ॥ करुणा व शीलय वसः तिसां तिया; प्राणीपिं लुमंका बोधिज्ञान बीम्ह ॥ ला हि नयेहिं धाः वईपिं दैत्य आदि राक्षस; पशुपंक्षिपिन्त करुणानं स्वैम्ह ॥ प्राणी म्येपिं मस्यासे अनित्य आत्मा शरीर; थःम्ह ध्येना; ला हि दान बीम्ह ॥ अहिंसावादि बुद्ध अनात्मावादि बुद्ध; कर्मवादि बुद्ध सत्यवादि बुद्ध ॥ जन्म जरा व्याधि मृत्यु आदि दुःख; भोग यायेम्वाक निर्वाणपद लाम्ह ॥धुँ॥ २२ ॥	राग मह्ला	तालष्टकंकार

पुर्वब्रम्हायणी

पिथयागु

पुर्वब्रम्हायणी हंसमारुद्धा ॥ कनकबदन अक्षसुत्रधारी ॥ उत्तरमाहेश्वरीबृषवाहनी ॥ चन्द्रधवलासन त्रिशुलहस्ता ॥धुँ॥ हुँ हुँ अष्ट शम्शान नीलबर्ण सहीता ॥ अष्ट भैरव गणपतिसहिता ॥ अष्टसिद्धि अनुत्तरमोक्ष प्रदायनी ॥ स्मरन्ति पापविनासिता ॥ धुँ ॥ पश्चिम इन्द्रायणी हस्तिवाहना ॥ कुकुमबर्ण बज्रहस्ता ॥ दक्षिण वाराहि घनघोररुपा ॥ अंकुश हस्ता ॥ आग्नेय कौमारी मयुरवाहनी ॥ रक्ता राक्षाबर्णशक्ति हस्ता ॥ नैऋत्य बैष्णवी गरुडवरा ॥ अष्टकुलनागा मेघादिना ॥ क्षेत्रपालसहित देवी गणा; प्रणमामी देवी श्रीतव पादअचल ॥ भुगुति मुगुति जसकारदेवी ॥धुँ॥ हुँ हुँ अष्टशम्शान नीलवर्णसहिता अष्टभैरव गणपति सहिता ॥ धुँ ॥ २३ ॥

राग भैरवी

ताल झ्याप

श्री बज्रयान चर्यागीत संग्रह

सम्पादक/प्रकाशक
श्री मंगलराज बज्राचार्य

अकिबाहाः

मुद्रक
सुभाष प्रिन्टिङ्ग प्रेस
नकबहीः, यल

ग्वाहालः राजभाई बज्राचार्य
सूर्यमान बज्राचार्य